CBSE Class 10 Hindi Course A 2026-27

Sample Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

Time Allowed: 3 hours **Maximum Marks: 80**

General Instructions

(i) इस प्रश्न पत्र में कुल **15** प्रश्न हैं | सभी प्रश्न अनिवार्य हैं |

(ii) यह प्रश्न पत्र चार खंडों में विभाजित है - **क, ख, ग और घ** |

(iii) खंड - क में अपठित बोध पर आधारित कुल **2** प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या **10** है |

(iv) खंड - ख में व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित कुल **4** प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या **20** है | प्रश्नों में विकल्प दिए गए हैं |

(v) खंड -ग में पाठ्य पुस्तक और पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित कुल **5** प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या **21** है | प्रश्नों में विकल्प दिए गए हैं |

(vi) खंड - घ में रचनात्मक लेखन पर आधारित कुल **4** प्रश्न हैं | प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |

(vii) प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए |

(viii) यथासंभव चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए |

(ix) शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए प्रश्न-पत्र के डिज़ाइन और मूल्यांकन के तरीके में कोई बदलाव नहीं है।

खंड - क (अपठित बोध) (14 marks)

अपठित बोध पर आधारित कुल 2 प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या 10 है |

1(I). निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

"एक छोटा कदम एक इंसान के लिए, लेकिन एक बड़ी छलांग मानवता के लिए"- यह शब्द नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा पर कदम रखते हुए कहे थे। आज वही भावना भारतवासियों के मन में तब जगी जब भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने 27 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर कदम रखा। यह क्षण केवल भारत की अंतरिक्ष वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह देश की अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पहचान, आत्मनिर्भरता और युवाओं की प्रेरणा के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। अंतरिक्ष के रहस्यों को समझने और नई तकनीकों का विकास करने के लिए अंतरिक्ष अन्वेषण मानवता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

27 जून 2025 को स्पेसएक्स के फाल्कन 9 रॉकेट से लॉन्च होने के बाद, शुभांशु शुक्ला और उनकी टीम ने 18 दिन आईएसएस पर बिताए। इस दौरान, उन्होंने माइक्रोग्रैविटी में 20 से अधिक विविध प्रयोग किए।

भारत ने अंतरिक्ष की यात्रा 1969 में इसरो की स्थापना से शुरू की थी। 1984 में राकेश शर्मा सोवियत अंतरिक्षयान के जरिए अंतरिक्ष में गए। राकेश शर्मा के बाद शुभांशु शुक्ला दूसरे भारतीय बने जिन्होंने अंतरिक्ष की यात्रा की, जो भारत की अंतरिक्ष यात्रा के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ता है। यह उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में भारत की बढ़ती साख को मजबूत करती है। अब 2025 में शुभांशु शुक्ला का आईएसएस पर पहुँचना इस बात का संकेत है कि भारत अब 'मानव अंतरिक्ष युग' में प्रवेश कर चुका है और यह भारत के हर युवा, वैज्ञानिक और नागरिक की उम्मीदों की उड़ान है। इस मिशन ने देश के लाखों बच्चों और युवाओं के मन में 'मैं' भी कर सकता हूँ की भावना जगाई है।

स्रोत - विज्ञान प्रगति (मासिक पत्रिका)

उपर्युक्त गद्यांश में किस विषय पर चर्चा की गई है? [1 mark]

(A) नील आर्मस्ट्रांग के चंद्रमा पर कदम रखने पर

(B) भारत के स्वर्णिम अंतरिक्ष अध्याय पर

(C) अंतरिक्ष के रहस्यों को समझने पर

(D) शुभांशु शुक्ला और उनकी टीम पर

Correct Answer: (B) भारत के स्वर्णिम अंतरिक्ष अध्याय पर

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि पूरे गद्यांश में किस विषय पर चर्चा हुई है।
- गद्यांश का मुख्य विषय वह होता है जिसके चारों ओर सारे वाक्य घूमते हैं। केवल एक-दो वाक्यों में आई बात पूरा विषय नहीं होती।

Step 1: गद्यांश का सार निकालें गद्यांश नील आर्मस्ट्रांग के प्रसिद्ध कथन से शुरू होता है। फिर बताया गया है कि 27 जून 2025 को ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला आईएसएस पहुँचे।
इसके बाद उनके 18 दिन के प्रयोगों, 1969 में इसरो की स्थापना और 1984 में राकेश शर्मा की यात्रा की बात आती है।
अंत में कहा गया है कि भारत अब 'मानव अंतरिक्ष युग' में प्रवेश कर चुका है। यानी पूरा गद्यांश भारत की अंतरिक्ष यात्रा के नए और स्वर्णिम अध्याय के बारे में है।

Step 2: विकल्पों की जाँच करें (A) गलत है। आर्मस्ट्रांग का कथन केवल भूमिका के रूप में आया है, उसी पर चर्चा नहीं की गई।
(B) सही है। भारत की अंतरिक्ष यात्रा और उसकी नई उपलब्धि पूरे गद्यांश की चर्चा है।
(C) गलत है। अंतरिक्ष के रहस्यों की बात गद्यांश में केवल एक वाक्य में आई है।
(D) गलत है। शुभांशु शुक्ला और उनकी टीम इस उपलब्धि का एक भाग हैं, पर गद्यांश केवल उन तक सीमित नहीं है। वह पूरे भारत की उपलब्धि की बात करता है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (B) भारत के स्वर्णिम अंतरिक्ष अध्याय पर**

Quick Tip to Solve: पूरे गद्यांश को पढ़कर सोचिए कि सारी बातें किस एक बड़े विषय की ओर ले जाती हैं।

1(II). निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन करके लिखिए :
कथन : "एक छोटा कदम एक इंसान के लिए, लेकिन एक बड़ी छलांग मानवता के लिए।"
कारण : यह कदम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानव अन्वेषण के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है।
विकल्प - [1 mark]

(A) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(B) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

Correct Answer: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Solution:

Step 1: कथन और कारण को समझें इस प्रश्न में पहले यह देखना है कि कथन सही है या नहीं, फिर कारण सही है या नहीं।
यदि दोनों सही हों, तो आगे जाँचना है कि कारण कथन की सही व्याख्या करता है या नहीं।

Step 2: कथन की जाँच गद्यांश की पहली पंक्ति में लिखा है कि 'एक छोटा कदम एक इंसान के लिए, लेकिन एक बड़ी छलांग मानवता के लिए' शब्द नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रमा पर कदम रखते हुए कहे थे।
यानी यह कथन गद्यांश के अनुसार बिल्कुल सही है।

Step 3: कारण की जाँच गद्यांश में कहा गया है कि अंतरिक्ष अन्वेषण मानवता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। साथ ही नई तकनीकों के विकास की बात भी है।
इसलिए यह कहना सही है कि वह कदम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानव अन्वेषण में बड़ी प्रगति का प्रतीक है।

Step 4: क्या कारण कथन की व्याख्या करता है कथन में 'बड़ी छलांग मानवता के लिए' कहा गया है। इसका अर्थ यही है कि एक कदम से पूरी मानवता को विज्ञान में बड़ी प्रगति मिली।
कारण यही बात खोलकर समझाता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Step 5: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गलत है, क्योंकि कथन ग़लत नहीं है। (B) गलत है, क्योंकि दोनों सही हैं।
(D) गलत है, क्योंकि कारण कथन की व्याख्या करता है, उससे अलग नहीं है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।**

Quick Tip to Solve: पहले कथन और कारण को अलग-अलग गद्यांश से मिलाइए, फिर देखिए कि कारण कथन को समझाता है या नहीं।

1(III). भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने 27 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर कदम रखा। यह क्षण भारत के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण साबित हुआ ?
सही विकल्प / विकल्पों का चयन कीजिए :
(i) आर्थिक आत्मनिर्भरता
(ii) युवाओं के लिए प्रेरणा
(iii) अंतरिक्ष विज्ञान में नई उपलब्धि
(iv) अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पहचान
विकल्प - [1 mark]

(A) कथन (i) और (ii) सही हैं

(B) केवल कथन (iii) सही है

(C) कथन (i) और (iv) सही हैं

(D) कथन (ii), (iii) और (iv) सही हैं

Correct Answer: (D) कथन (ii), (iii) और (iv) सही हैं

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि 27 जून 2025 का क्षण भारत के लिए किन कारणों से महत्त्वपूर्ण रहा। चार कथनों में से सही कथन चुनने हैं।
- हर कथन को गद्यांश से मिलाकर देखना है।

Step 1: कथन (i) आर्थिक आत्मनिर्भरता गद्यांश में 'आत्मनिर्भरता' शब्द आया है, पर उसके साथ 'आर्थिक' शब्द कहीं नहीं है। यहाँ बात वैज्ञानिक पहचान और आत्मनिर्भरता की है।
आर्थिक लाभ या अर्थव्यवस्था की कोई बात नहीं हुई है, इसलिए कथन (i) सही नहीं है।

Step 2: कथन (ii) युवाओं के लिए प्रेरणा गद्यांश कहता है कि यह क्षण 'युवाओं की प्रेरणा के लिए' मील का पत्थर है। अंत में भी लिखा है कि मिशन ने लाखों बच्चों और युवाओं के मन में 'मैं भी कर सकता हूँ' की भावना जगाई।
इसलिए कथन (ii) सही है।

Step 3: कथन (iii) अंतरिक्ष विज्ञान में नई उपलब्धि गद्यांश के अनुसार यह भारत की अंतरिक्ष वैज्ञानिक उपलब्धि है। शुभांशु शुक्ला ने 18 दिन में 20 से अधिक प्रयोग भी किए।
इसलिए कथन (iii) सही है।

Step 4: कथन (iv) अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पहचान गद्यांश में साफ़ लिखा है कि यह क्षण देश की अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पहचान का मील का पत्थर है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत की साख बढ़ी है।
इसलिए कथन (iv) सही है।

Step 5: विकल्प मिलाएँ सही कथन (ii), (iii) और (iv) हैं। (A) और (C) में कथन (i) जुड़ा है, इसलिए वे गलत हैं। (B) में केवल (iii) है, जबकि और भी कथन सही हैं, इसलिए वह अधूरा है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (D) कथन (ii), (iii) और (iv) सही हैं**

Quick Tip to Solve: हर कथन को गद्यांश के उसी वाक्य से मिलाइए जहाँ मील का पत्थर बताया गया है।

1(IV). 'भारत अब 'मानव अंतरिक्ष युग' में प्रवेश कर चुका है।' गद्यांश के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [2 marks]

Solution:

Concept:

- हमें गद्यांश के तथ्यों से यह सिद्ध करना है कि भारत अब 'मानव अंतरिक्ष युग' में प्रवेश कर चुका है। 2 अंक के प्रश्न में दो ठोस बिंदु लिखना काफ़ी है।

Step 1: गद्यांश से तथ्य छाँटें भारत ने अंतरिक्ष की यात्रा 1969 में इसरो की स्थापना से शुरू की थी।
1984 में राकेश शर्मा सोवियत अंतरिक्षयान से अंतरिक्ष गए।
राकेश शर्मा के बाद शुभांशु शुक्ला अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले दूसरे भारतीय बने। यह भारत की अंतरिक्ष यात्रा के इतिहास में नया अध्याय है।
इस उपलब्धि से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में भारत की साख बढ़ी है।

Step 2: उत्तर लिखें गद्यांश के अनुसार भारत ने 1969 में इसरो की स्थापना के साथ अंतरिक्ष की यात्रा शुरू की थी। 1984 में राकेश शर्मा अंतरिक्ष गए और उनके बाद 2025 में शुभांशु शुक्ला आईएसएस पहुँचकर ऐसा करने वाले दूसरे भारतीय बने।
यह उपलब्धि भारत की अंतरिक्ष यात्रा के इतिहास में नया अध्याय जोड़ती है और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में उसकी साख बढ़ाती है। इसी से सिद्ध होता है कि भारत अब 'मानव अंतरिक्ष युग' में प्रवेश कर चुका है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: भारत की यात्रा 1969 से शुरू हुई, राकेश शर्मा के बाद शुभांशु शुक्ला दूसरे भारतीय अंतरिक्ष यात्री बने, इसलिए भारत मानव अंतरिक्ष युग में पहुँच चुका है।**

Quick Tip to Solve: गद्यांश में दी गई तारीखों (1969, 1984, 2025) और उनसे जुड़ी उपलब्धियों को क्रम से लिखिए।

1(V). बच्चों और युवाओं के मन में 'मैं' भी कर सकता हूँ की भावना शुभांशु शुक्ला के अंतरिक्ष में कदम रखने से कैसे जागृत हुई ? [2 marks]

Solution:

Concept:

- हमें बताना है कि शुभांशु शुक्ला के अंतरिक्ष में कदम रखने से बच्चों और युवाओं में 'मैं भी कर सकता हूँ' की भावना कैसे जागी।
- इसका उत्तर गद्यांश के अंतिम भाग और मिशन की उपलब्धियों में मिलेगा।

Step 1: कारण छाँटें जब किसी को अपने ही देश का व्यक्ति कोई अभूतपूर्व सफलता पाते दिखता है, तो उसे लगता है कि वह भी ऐसा कर सकता है।
शुभांशु शुक्ला भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन थे। उन्होंने आईएसएस पर 18 दिन बिताए और 20 से अधिक प्रयोग किए।
यह देखकर बच्चों को बड़े सपने देखने की प्रेरणा मिली।
गद्यांश यह भी कहता है कि यह मिशन भारत के हर युवा, वैज्ञानिक और नागरिक की उम्मीदों की उड़ान है।

Step 2: उत्तर लिखें शुभांशु शुक्ला ने अंतरिक्ष में कदम रखकर एक अभूतपूर्व सफलता पाई। इसे देखकर देश के बच्चों और युवाओं को लगा कि जब हमारे अपने देश का एक व्यक्ति वहाँ पहुँच सकता है, तो वे भी कुछ बड़ा कर सकते हैं।
इस मिशन की सफलता ने उन्हें बड़े सपने देखने और उसके लिए मेहनत करने की प्रेरणा दी। इस तरह उनके मन में 'मैं भी कर सकता हूँ' की भावना जागी।

Step 3: Conclusion **उत्तर: मिशन की अभूतपूर्व सफलता देखकर बच्चों और युवाओं को सपने देखने और मेहनत करने की प्रेरणा मिली, जिससे 'मैं भी कर सकता हूँ' की भावना जागी।**

Quick Tip to Solve: सोचिए कि अपने देश के किसी व्यक्ति की बड़ी सफलता देखकर बच्चों को क्या महसूस होता है।

2(I). निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ज़िंदगी को
वह गढ़ेंगे जो शिलाएँ तोड़ते हैं,
जो भगीरथ नीर की निर्भय शिराएँ मोड़ते हैं।
यज्ञ को इस शक्ति-श्रम के
श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ !!
ज़िंदगी को
वे गढ़ेंगे जो खदानें खोदते हैं,
लौह के सोए असुर को कर्म-रथ में जोतते हैं।
यज्ञ को इस शक्ति श्रम के
श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ !!
ज़िंदगी को
वे गढ़ेंगे जो प्रभंजन हाँकते हैं,
शूरवीरों के चरण से रक्त-रेखा आँकते हैं।
यज्ञ को इस शक्ति-श्रम के
श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ !!
ज़िंदगी को
वे गढ़ेंगे जो प्रलय को रोकते हैं,
रक्त से रंजित धरा पर शांति का पथ खोजते हैं।
यज्ञ को इस शक्ति-श्रम के
श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ !!
मैं नया इंसान हूँ इस यज्ञ में सहयोग दूँगा।
ख़ूबसूरत ज़िंदगी की नौजवानी भोग लूँगा।
- केदारनाथ अग्रवाल (जो शिलाएँ तोड़ते हैं)

प्रस्तुत कविता का मुख्य भाव है : [1 mark]

(A) शूरवीरों के साहस की सराहना

(B) नौजवानों की ताकत का सम्मान

(C) किसानों और मजदूरों की प्रशंसा

(D) मेहनती और दृढ़-निश्चयी लोगों का गुणगान

Correct Answer: (D) मेहनती और दृढ़-निश्चयी लोगों का गुणगान

Solution:

Concept:

- प्रश्न कविता का मुख्य भाव पूछता है। मुख्य भाव वह है जो पूरी कविता में बार-बार उभरता है।

Step 1: कविता का भाव खोजें हर पद 'ज़िंदगी को वे गढ़ेंगे जो...' से शुरू होता है और 'यज्ञ को इस शक्ति-श्रम के श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ' पर समाप्त होता है।
कवि उन लोगों की बात करता है जो शिलाएँ तोड़ते हैं, खदानें खोदते हैं, प्रभंजन हाँकते हैं और प्रलय को रोकते हैं। ये सब मेहनत और दृढ़ निश्चय वाले लोग हैं।
कवि इन सबके शक्ति-श्रम के यज्ञ को सबसे श्रेष्ठ मानता है। यानी कविता मेहनती और दृढ़-निश्चयी लोगों का गुणगान करती है।

Step 2: विकल्पों की जाँच करें (A) शूरवीरों का ज़िक्र केवल एक पंक्ति में है, पूरी कविता उन पर नहीं है।
(B) कवि अंत में ख़ुद को नया इंसान कहता है, पर पूरी कविता नौजवानों की ताकत का सम्मान नहीं करती।
(C) खदानें खोदने वाले मज़दूर एक उदाहरण हैं, पर कविता केवल किसानों और मजदूरों के लिए नहीं है। उसमें हर मेहनती और दृढ़ व्यक्ति शामिल है।
(D) यह पूरी कविता का सही और व्यापक भाव है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (D) मेहनती और दृढ़-निश्चयी लोगों का गुणगान**

Quick Tip to Solve: हर पद के अंत में दोहराई गई पंक्ति पर ध्यान दीजिए, वही कविता का भाव बताती है।

2(II). मैं नए विचारों से प्रेरित इंसान हूँ । श्रम और मानवता से समाज के निर्माण में सहयोग दूँगा। यह भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है ?

विकल्प : [1 mark]

(A) ख़ूबसूरत ज़िंदगी की नौजवानी भोग लूँगा

(B) मैं नया इंसान हूँ इस यज्ञ में सहयोग दूँगा

(C) ज़िंदगी को वह गढ़ेंगे जो शिलाएँ तोड़ते हैं

(D) ज़िंदगी को वे गढ़ेंगे जो प्रभंजन हाँकते हैं

Correct Answer: (B) मैं नया इंसान हूँ इस यज्ञ में सहयोग दूँगा

Solution:

Concept:

- दिए गए भाव में दो बातें हैं: कवि नए विचारों से प्रेरित इंसान है, और वह श्रम तथा मानवता से समाज निर्माण में सहयोग देगा।
- हमें वह पंक्ति खोजनी है जिसमें यही दोनों बातें कही गई हैं।

Step 1: कविता की अंतिम पंक्तियाँ देखें कविता के अंत में कवि कहता है: 'मैं नया इंसान हूँ इस यज्ञ में सहयोग दूँगा'। यहाँ 'नया इंसान' का अर्थ है नए विचारों से प्रेरित व्यक्ति। 'इस यज्ञ में सहयोग दूँगा' का अर्थ है श्रम से समाज निर्माण में योगदान देना।

Step 2: विकल्पों की जाँच करें (A) 'ख़ूबसूरत ज़िंदगी की नौजवानी भोग लूँगा' में जीवन का आनंद लेने की बात है, सहयोग की नहीं।
(B) इसमें 'नया इंसान' और 'सहयोग दूँगा' दोनों भाव हैं। यह सही है।
(C) और (D) में दूसरे लोगों की बात है जो शिलाएँ तोड़ते हैं या प्रभंजन हाँकते हैं। कवि ख़ुद के बारे में कुछ नहीं कहता।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (B) मैं नया इंसान हूँ इस यज्ञ में सहयोग दूँगा**

Quick Tip to Solve: उस पंक्ति को खोजिए जिसमें बोलने वाला 'मैं' सहयोग देने की बात कर रहा है।

2(III). निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन - जो लोग कठिनाइयों और बाधाओं को तोड़कर आगे बढ़ते हैं, वे अपने जीवन और समाज को गढ़ने वाले होते हैं।
कारण - इतिहास गवाह है कि हमारे महापुरुषों ने मेहनत, धैर्य और संघर्ष के आधार पर सुंदर समाज का निर्माण किया।
विकल्प : [1 mark]

(A) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(B) कथन और कारण दोनों ही ग़लत हैं।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

Correct Answer: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Solution:

Step 1: कथन और कारण को समझें कथन कहता है कि जो लोग कठिनाइयों और बाधाओं को तोड़कर आगे बढ़ते हैं, वे जीवन और समाज को गढ़ते हैं। कारण कहता है कि इतिहास गवाह है कि महापुरुषों ने मेहनत, धैर्य और संघर्ष से सुंदर समाज बनाया।

Step 2: कथन की जाँच कविता में शिलाएँ तोड़ने वाले, भगीरथ की तरह धारा मोड़ने वाले और प्रलय को रोकने वाले लोगों के लिए कहा गया है 'ज़िंदगी को वे गढ़ेंगे'।

यानी बाधाओं को तोड़ने वाले ही जीवन को गढ़ते हैं। कथन सही है।

Step 3: कारण की जाँच इतिहास में महापुरुषों ने कड़ी मेहनत, धैर्य और संघर्ष से समाज और देश का निर्माण किया है। उदाहरण के लिए हमारे महापुरुषों ने बाधाओं का सामना करते हुए भारत का निर्माण किया। कारण सही है।

Step 4: क्या कारण कथन की व्याख्या करता है कथन में सिद्धांत बताया गया है कि बाधाएँ तोड़ने वाले समाज गढ़ते हैं। कारण इतिहास का प्रमाण देकर इसी बात को पुष्ट करता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Step 5: अन्य विकल्पों की जाँच (A) और (B) गलत हैं, क्योंकि कथन और कारण दोनों सही हैं। (D) गलत है, क्योंकि कारण कथन को समझाता है, उससे अलग बात नहीं कहता।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।**

Quick Tip to Solve: पहले देखिए कि कथन कविता से मिलता है या नहीं, फिर देखिए कि कारण उसका प्रमाण देता है या नहीं।

2(IV). मानव जीवन का श्रेष्ठतम यज्ञ कवि ने किसे माना है और क्यों? [2 marks]

Solution:

Concept:

- प्रश्न के दो भाग हैं: कवि ने मानव जीवन का श्रेष्ठतम यज्ञ किसे माना है, और ऐसा क्यों माना है।

Step 1: कविता से उत्तर खोजें हर पद में कवि कहता है 'यज्ञ को इस शक्ति-श्रम के श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ'। यहाँ 'शक्ति-श्रम' का अर्थ मेहनत और परिश्रम है।
कवि शिलाएँ तोड़ने, खदान खोदने और प्रलय को रोकने जैसे कठिन कामों को मानव जीवन का श्रेष्ठ यज्ञ कहता है।

Step 2: कारण सोचें परिश्रम से ही शिलाएँ टूटती हैं, खदानें खुदती हैं और जीवन गढ़ा जाता है। परिश्रम ही सफलता का मूल आधार है।
जीवन में कोई भी लक्ष्य पाने के लिए परिश्रम के सिवा कोई रास्ता नहीं है। इसलिए कवि इसे श्रेष्ठतम यज्ञ मानता है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: कवि ने परिश्रम को श्रेष्ठतम यज्ञ माना है, क्योंकि परिश्रम सफलता का मूल आधार है और लक्ष्य पाने का एकमात्र साधन है।**

Quick Tip to Solve: कविता के हर पद की दोहराई गई अंतिम पंक्ति में 'शक्ति-श्रम' का अर्थ सोचिए।

2(V). यह कविता साहस और संघर्ष का प्रतीक है - कैसे ? कविता से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। [2 marks]

Solution:

Concept:

- हमें बताना है कि कविता साहस और संघर्ष की प्रतीक कैसे है, और उदाहरण कविता से देने हैं।

Step 1: कविता का संदेश पूरी कविता साहस, संघर्ष और शक्ति-श्रम के बल पर आगे बढ़ने का संदेश देती है। कवि इतिहास के उन लोगों की ओर संकेत करता है जिन्होंने मेहनत से सुखी समाज बनाया।

Step 2: कविता से उदाहरण 'जो भगीरथ नीर की निर्भय शिराएँ मोड़ते हैं': जैसे भगीरथ ने कठिन तप कर गंगा को धरती पर लाया, वैसे ही साहसी लोग असंभव काम करते हैं।
'वे गढ़ेंगे जो खदानें खोदते हैं, लौह के सोए असुर को कर्म-रथ में जोतते हैं': ये पंक्तियाँ कठिन परिश्रम और संघर्ष का चित्र खींचती हैं।
'वे गढ़ेंगे जो प्रलय को रोकते हैं': यह पंक्ति बड़े संकट से लड़ने का साहस दिखाती है।

Step 3: उत्तर लिखें यह कविता साहस और संघर्ष का प्रतीक है, क्योंकि इसमें शिलाएँ तोड़ने, खदानें खोदने और प्रलय को रोकने वाले साहसी और परिश्रमी लोगों की प्रशंसा है। भगीरथ की निर्भय शिराएँ मोड़ने की पंक्ति और खदानें खोदने तथा लौह के सोए असुर को कर्म-रथ में जोतने की पंक्तियाँ मेहनत और संघर्ष की शक्ति दिखाती हैं।

Step 4: Conclusion **उत्तर: कविता में शिलाएँ तोड़ने, खदानें खोदने और प्रलय रोकने जैसे साहसी कामों का**

वर्णन है, जो मेहनत, शक्ति और संघर्ष को दर्शाते हैं।

Quick Tip to Solve: कविता के उन पदों से दो पंक्तियाँ चुनिए जिनमें कठिन काम करने का वर्णन है।

खंड - ख (व्यावहारिक व्याकरण) (16 marks)

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित कुल 4 प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या 20 है | प्रश्नों में विकल्प दिए गए हैं |

3(I). निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
चैत आया और टेसू के फूल दहकने लगे।
(सरल वाक्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- प्रश्न में दिए वाक्य को सरल वाक्य में बदलना है।
- सरल वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही मुख्य क्रिया होती है। उसमें कोई उपवाक्य नहीं होता।
- दिए वाक्य 'चैत आया और टेसू के फूल दहकने लगे' में दो क्रियाएँ हैं: 'आया' और 'दहकने लगे'। दोनों भाग 'और' से जुड़े हैं, इसलिए यह संयुक्त वाक्य है।

Step 1: नियम याद करना संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य बनाने के लिए एक क्रिया को 'ते ही', 'कर' या 'ने पर' जैसे रूप में बदल देते हैं।
फिर जोड़ने वाला शब्द 'और' हटा देते हैं। इस तरह दो वाक्य मिलकर एक वाक्य बन जाते हैं।

Step 2: वाक्य को बदलना 'चैत आया' को बदलकर 'चैत आते ही' कर दिया।
'और' शब्द हटा दिया।
मुख्य क्रिया 'दहकने लगे' को वैसा ही रहने दिया।
इस तरह नया वाक्य बना: चैत आते ही टेसू के फूल दहकने लगे।

Step 3: जाँच करना नए वाक्य में केवल एक मुख्य क्रिया 'दहकने लगे' है। कोई जोड़ने वाला शब्द या उपवाक्य नहीं है। अर्थ भी वही है जो पहले वाक्य का था। इसलिए यह सही सरल वाक्य है।

उत्तर: चैत आते ही टेसू के फूल दहकने लगे।

Quick Tip to Solve: संयुक्त वाक्य से 'और' हटाइए और एक क्रिया को 'आते ही' जैसे रूप में बदल दीजिए।

3(II). उसके पास घड़ी तो थी, किन्तु ठीक नहीं थी।
(मिश्र वाक्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'उसके पास घड़ी तो थी, किन्तु ठीक नहीं थी' को मिश्र वाक्य में बदलना है।
- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और उसके अधीन एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य प्रायः 'जो', 'कि', 'जब', 'यदि' जैसे शब्दों से शुरू होता है।
- दिए वाक्य के दोनों भाग 'किन्तु' से जुड़े हैं और बराबर के हैं, इसलिए यह संयुक्त वाक्य है।

Step 1: नियम याद करना संयुक्त वाक्य को मिश्र वाक्य बनाने के लिए जोड़ने वाला शब्द 'किन्तु' हटाते हैं।
फिर एक भाग को 'जो' जैसे शब्द से शुरू करके दूसरे भाग के अधीन कर देते हैं।

Step 2: वाक्य को बदलना 'उसके पास घड़ी थी' को बदलकर 'जो घड़ी उसके पास थी' किया। यह आश्रित उपवाक्य है, क्योंकि यह 'घड़ी' संज्ञा के बारे में बताता है।

'ठीक नहीं थी' को 'वह ठीक नहीं थी' किया। यह प्रधान उपवाक्य है।
दोनों को जोड़ने पर वाक्य बना: जो घड़ी उसके पास थी, वह ठीक नहीं थी।

Step 3: जाँच करना 'जो घड़ी उसके पास थी' अकेला पूरा अर्थ नहीं देता। उसे प्रधान उपवाक्य की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए नया वाक्य मिश्र वाक्य है।

उत्तर: जो घड़ी उसके पास थी, वह ठीक नहीं थी।

Quick Tip to Solve: 'किन्तु' हटाइए और 'घड़ी' के बारे में बताने वाले भाग को 'जो' से शुरू कीजिए।

3(III). जब बाबू जी रामायण का पाठ करते तब हम उनकी बगल में बैठे रहते।
(संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'जब बाबू जी रामायण का पाठ करते तब हम उनकी बगल में बैठे रहते' को संयुक्त वाक्य में बदलना है।
- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं। वे 'और', 'तथा', 'परंतु', 'या', 'इसलिए' जैसे शब्दों से जुड़ते हैं।
- दिए वाक्य में 'जब ... तब' लगा है और पहला भाग दूसरे पर निर्भर है, इसलिए यह मिश्र वाक्य है।

Step 1: नियम याद करना मिश्र वाक्य को संयुक्त बनाने के लिए 'जब' और 'तब' जैसे निर्भरता दिखाने वाले शब्द हटाते हैं।
फिर दोनों उपवाक्यों को बराबर का मानकर 'और' जैसे योजक से जोड़ देते हैं।

Step 2: वाक्य को बदलना 'जब' हटाने पर पहला भाग बना: बाबू जी रामायण का पाठ करते।
'तब' हटाने पर दूसरा भाग बना: हम उनकी बगल में बैठे रहते।
दोनों को 'और' से जोड़ा: बाबू जी रामायण का पाठ करते और हम उनकी बगल में बैठे रहते।

Step 3: जाँच करना अब दोनों भाग अपने-अपने स्थान पर स्वतंत्र हैं और बराबर महत्व के हैं। बीच में 'और' है। इसलिए यह संयुक्त वाक्य है।

उत्तर: बाबू जी रामायण का पाठ करते और हम उनकी बगल में बैठे रहते।

Quick Tip to Solve: 'जब' और 'तब' हटाइए, फिर दोनों उपवाक्यों को 'और' से जोड़ दीजिए।

3(IV). घर में पतोहू रो रही है, जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं।
(रचना की दृष्टि से वाक्य का भेद लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'घर में पतोहू रो रही है, जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं' की रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताना है।
- रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं: सरल, संयुक्त और मिश्र।

Step 1: नियम याद करना सरल वाक्य में एक ही उपवाक्य होता है।
संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य 'और', 'परंतु' जैसे शब्दों से जुड़ते हैं।
मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और उससे जुड़ा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होता है। आश्रित उपवाक्य 'जो', 'जिसे', 'कि', 'जब' जैसे शब्द से शुरू होता है।

Step 2: वाक्य के उपवाक्य अलग करना पहला उपवाक्य: 'घर में पतोहू रो रही है'। यह अपने आप में पूरा है, इसलिए प्रधान उपवाक्य है।
दूसरा उपवाक्य: 'जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं'। यह 'जिसे' से शुरू होता है और 'पतोहू' के बारे में बताता है। यह आश्रित उपवाक्य है।

Step 3: निष्कर्ष यहाँ एक प्रधान और एक आश्रित उपवाक्य है। इसलिए वाक्य मिश्र वाक्य है।
यह संयुक्त वाक्य नहीं है, क्योंकि दूसरा भाग 'जिसे' के कारण पहले भाग पर निर्भर है।

उत्तर: मिश्र वाक्य

Quick Tip to Solve: देखिए कि 'जिसे' से शुरू होने वाला भाग प्रधान उपवाक्य पर निर्भर है या नहीं।

3(V). जब बाबू जी हमारी ओर देखते, तब हम कुछ लजाकर और मुस्कुराकर आइना नीचे रख देते।
(रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- रेखांकित भाग 'जब बाबू जी हमारी ओर देखते' का उपवाक्य-भेद बताना है।
- आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं: संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य।

Step 1: नियम याद करना संज्ञा उपवाक्य 'कि' से शुरू होता है और संज्ञा का काम करता है।
विशेषण उपवाक्य 'जो', 'जिसे' से शुरू होता है और किसी संज्ञा की विशेषता बताता है।
क्रियाविशेषण उपवाक्य 'जब', 'जहाँ', 'जैसे', 'यदि' जैसे शब्दों से शुरू होता है और मुख्य क्रिया का समय, स्थान, ढंग या कारण बताता है।

Step 2: रेखांकित भाग पर नियम लगाना रेखांकित भाग 'जब' से शुरू होता है।
प्रधान क्रिया 'रख देते' है। प्रश्न पूछिए: हम आइना कब नीचे रख देते? उत्तर है: जब बाबू जी हमारी ओर देखते।
यह भाग क्रिया का समय बताता है। इसलिए यह क्रियाविशेषण उपवाक्य (कालवाचक) है।

Step 3: दूसरे विकल्प गलत क्यों हैं यह संज्ञा उपवाक्य नहीं है, क्योंकि यह 'कि' से शुरू नहीं होता और किसी संज्ञा की जगह नहीं आया है।
यह विशेषण उपवाक्य नहीं है, क्योंकि यह किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता नहीं बता रहा, 'जब' से शुरू होकर क्रिया का समय बता रहा है।

उत्तर: क्रियाविशेषण उपवाक्य

Quick Tip to Solve: प्रधान क्रिया से 'कब' पूछिए। उत्तर में जो भाग मिले, वही उपवाक्य का भेद तय करता है।

4(I). निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
लेखिका के पिताजी रसोई को भटियारखाना कहते थे।
(कर्मवाच्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'लेखिका के पिताजी रसोई को भटियारखाना कहते थे' को कर्मवाच्य में बदलना है।
- इस वाक्य में कर्ता 'लेखिका के पिताजी', कर्म 'रसोई' और क्रिया 'कहते थे' है। अभी वाक्य कर्तृवाच्य में है, क्योंकि क्रिया कर्ता के अनुसार चल रही है।

Step 1: कर्मवाच्य का नियम कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है। कर्ता के आगे 'द्वारा' लगता है।
क्रिया में 'जाना' धातु के रूप ('जाता', 'गया', 'जाएगा') जुड़ते हैं। काल वही रहता है।

Step 2: वाक्य को बदलना कर्ता 'लेखिका के पिताजी' के आगे 'द्वारा' लगाया: लेखिका के पिताजी द्वारा।
कर्म 'रसोई को भटियारखाना' वैसा ही रखा।
क्रिया 'कहते थे' भूतकाल की आदत बताती है। उसे 'कहा जाता था' कर दिया।
यहाँ 'रसोई' के आगे 'को' है, इसलिए क्रिया पुल्लिंग एकवचन 'कहा जाता था' ही रहती है।

Step 3: जाँच करना नया वाक्य: लेखिका के पिताजी द्वारा रसोई को भटियारखाना कहा जाता था।

कर्ता के साथ 'द्वारा' है और क्रिया में 'जाता था' जुड़ा है। यही कर्मवाच्य की पहचान है।

उत्तर: लेखिका के पिताजी द्वारा रसोई को भटियारखाना कहा जाता था।

Quick Tip to Solve: कर्ता के आगे 'द्वारा' लगाइए और क्रिया में 'जाना' के रूप जोड़कर 'कहा जाता था' बनाइए।

4(II). बालगोबिन भगत द्वारा पतोहू को मायके भेज दिया गया।
(कर्तृवाच्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'बालगोबिन भगत द्वारा पतोहू को मायके भेज दिया गया' को कर्तृवाच्य में बदलना है।
- इस वाक्य में 'द्वारा' लगा है और क्रिया में 'गया' जुड़ा है। यह कर्मवाच्य की पहचान है।

Step 1: कर्तृवाच्य का नियम कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है। कर्ता के साथ 'ने' लग सकता है।
क्रिया से 'जाना' धातु का रूप हट जाता है और क्रिया कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार चलती है।

Step 2: वाक्य को बदलना 'बालगोबिन भगत द्वारा' से 'द्वारा' हटाया और उसकी जगह 'ने' लगाया: बालगोबिन भगत ने।
कर्म 'पतोहू को मायके' वैसा ही रखा।
क्रिया 'भेज दिया गया' से 'गया' हटाया और 'भेज दिया' रखा।
कर्म के साथ 'को' है, इसलिए क्रिया पुल्लिंग एकवचन 'भेज दिया' ही रहेगी।

Step 3: जाँच करना नया वाक्य: बालगोबिन भगत ने पतोहू को मायके भेज दिया।
यहाँ कर्ता 'बालगोबिन भगत ने' प्रधान है। यह कर्तृवाच्य है।

उत्तर: बालगोबिन भगत ने पतोहू को मायके भेज दिया।

Quick Tip to Solve: 'द्वारा' की जगह 'ने' लगाइए और क्रिया से 'गया' हटा दीजिए।

4(III). चोट लगने के कारण वह चल नहीं पाया।
(भाववाच्य में बदलकर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'चोट लगने के कारण वह चल नहीं पाया' को भाववाच्य में बदलना है।
- इस वाक्य की क्रिया 'चल नहीं पाया' अकर्मक है, यानी उसका कोई कर्म नहीं है।

Step 1: भाववाच्य का नियम भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है, कर्ता या कर्म नहीं। यह वाच्य प्रायः अकर्मक क्रिया में बनता है।
कर्ता के आगे 'से' लगता है। क्रिया सदा पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में रहती है। उसमें 'जाना' का रूप जुड़ता है।
इसका प्रयोग अकसर असमर्थता (कुछ न कर पाने) के भाव में होता है।

Step 2: वाक्य को बदलना 'वह' के आगे 'से' लगाने पर 'उससे' बना।
'चल नहीं पाया' को 'चला नहीं जा सका' किया। इसमें 'जा सका' जोड़ा गया है।
'चोट लगने के कारण' वैसा ही रखा।

Step 3: जाँच करना नया वाक्य: चोट लगने के कारण उससे चला नहीं जा सका।
कर्ता के साथ 'से' है, क्रिया पुल्लिंग एकवचन है और असमर्थता का भाव है। यही भाववाच्य है।

उत्तर: चोट लगने के कारण उससे चला नहीं जा सका।

Quick Tip to Solve: 'वह' को 'उससे' कीजिए और क्रिया को 'चला नहीं जा सका' लिखिए।

4(IV). बच्चों द्वारा नेताजी को चश्मा पहनाया गया।
(वाच्य पहचानकर भेद लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'बच्चों द्वारा नेताजी को चश्मा पहनाया गया' में वाच्य का भेद पहचानना है।
- वाच्य के तीन भेद हैं: कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

Step 1: नियम याद करना कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है और कर्ता प्रधान होता है।
कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है। कर्ता के आगे 'द्वारा' या 'से' आता है और क्रिया में 'जाना' के रूप जुड़ते हैं।
भाववाच्य में भाव प्रधान होता है। क्रिया अकर्मक होती है और पुल्लिंग एकवचन रहती है।

Step 2: वाक्य पर नियम लगाना कर्ता 'बच्चों' के साथ 'द्वारा' लगा है।
क्रिया 'पहनाया गया' में 'गया' जुड़ा है, जो 'जाना' धातु का रूप है।
क्रिया कर्म 'चश्मा' (पुल्लिंग एकवचन) के अनुसार है।
ये तीनों बातें कर्मवाच्य की पहचान हैं।

Step 3: निष्कर्ष यह वाक्य कर्मवाच्य में है।
यह भाववाच्य नहीं है, क्योंकि 'पहनाना' सकर्मक क्रिया है और उसका कर्म 'चश्मा' वाक्य में मौजूद है।

उत्तर: कर्मवाच्य

Quick Tip to Solve: कर्ता के आगे 'द्वारा' और क्रिया में 'गया' देखिए। ये किस वाच्य के चिह्न हैं?

4(V). आराम से सेकंड क्लास में जाने के लिए दाम अधिक लगते हैं।
(वाच्य पहचानकर भेद लिखिए) [1 mark]

Solution:

Concept:

- वाक्य 'आराम से सेकंड क्लास में जाने के लिए दाम अधिक लगते हैं' में वाच्य का भेद पहचानना है।
- वाच्य के तीन भेद हैं: कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

Step 1: नियम याद करना कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है और क्रिया उसी के लिंग-वचन के अनुसार चलती है।
कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता के साथ 'द्वारा' या 'से' आता है और क्रिया में 'जाना' के रूप जुड़ते हैं।

Step 2: वाक्य पर नियम लगाना वाक्य का कर्ता 'दाम' है। 'लगना' क्रिया उसी के अनुसार बहुवचन 'लगते हैं' रूप में आई है।
वाक्य में 'द्वारा' या 'से' जैसा कर्ता-चिह्न नहीं है।
क्रिया में 'जाना' धातु का कोई रूप जुड़ा नहीं है।
इसलिए यह कर्मवाच्य या भाववाच्य नहीं है।

Step 3: निष्कर्ष कर्ता प्रधान है और क्रिया उसके अनुसार है, इसलिए यह कर्तृवाच्य है।

उत्तर: कर्तृवाच्य

Quick Tip to Solve: देखिए कि क्रिया 'लगते हैं' किस शब्द के लिंग-वचन के अनुसार है और कर्ता के साथ कोई चिह्न है या नहीं।

5(I). निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए :

आज भी भारत में अनेक अभिमन्यु हैं। [1 mark]

Solution:

Step 1: पद-परिचय का नियम पद-परिचय में हम बताते हैं कि वाक्य में आया शब्द किस भेद का है और उसका लिंग, वचन और कारक क्या है। संज्ञा के लिए पहले संज्ञा का भेद, फिर लिंग, वचन और कारक बताया जाता है।

Step 2: शब्द की पहचान रेखांकित शब्द 'अभिमन्यु' है। यह महाभारत के एक वीर योद्धा का नाम है। किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं, इसलिए यह शब्द संज्ञा है।

Step 3: संज्ञा का भेद वाक्य में 'अनेक अभिमन्यु' कहा गया है। यहाँ नाम किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं है। यह उन सभी वीरों के लिए आया है जो अभिमन्यु जैसा साहस रखते हैं। जब एक ही नाम पूरी जाति या गुण वाले कई लोगों के लिए आए, तो वह जातिवाचक संज्ञा होता है।

Step 4: लिंग, वचन और कारक अभिमन्यु पुरुष का नाम है, इसलिए पुल्लिंग है। शब्द का रूप जैसा है वैसा ही रखा गया है, इसलिए उत्तर-कुंजी के अनुसार एकवचन माना गया है। वाक्य में 'हैं' क्रिया का काम इसी शब्द ने किया है, यानी यही कर्ता है, इसलिए कर्ता कारक है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक**

Quick Tip to Solve: पहले बताइए कि शब्द संज्ञा है या नहीं, फिर देखिए कि यहाँ यह एक व्यक्ति का नाम है या कई वीरों का।

5(II). यह पुस्तक मेरी बड़ी बहन ने लिखी है। [1 mark]

Solution:

Step 1: पद-परिचय का नियम 'यह' शब्द सर्वनाम भी हो सकता है और विशेषण भी। इसलिए पहले देखना पड़ता है कि वह वाक्य में अकेला आया है या किसी संज्ञा के साथ। संज्ञा के साथ आकर उसकी विशेषता बताए, तो वह सार्वनामिक विशेषण होता है।

Step 2: वाक्य में स्थान देखना वाक्य है: 'यह पुस्तक मेरी बड़ी बहन ने लिखी है।' 'यह' अकेला नहीं है, यह सीधे 'पुस्तक' से पहले बैठा है। यह बताता है कि कौन-सी पुस्तक, यानी पास रखी हुई पुस्तक।

Step 3: भेद तय करना संज्ञा की विशेषता बताने वाला शब्द विशेषण होता है। 'यह' मूल रूप से सर्वनाम है, पर यहाँ संज्ञा के साथ आया है। ऐसे शब्द को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जिस संज्ञा की विशेषता बताई जा रही है, वह विशेष्य है, यानी 'पुस्तक'।

Step 4: लिंग और वचन विशेषण का लिंग और वचन विशेष्य के अनुसार चलता है। 'पुस्तक' एक है, इसलिए एकवचन। 'पुस्तक' स्त्रीलिंग शब्द है, इसकी क्रिया 'लिखी है' भी स्त्रीलिंग में है। इसलिए 'यह' स्त्रीलिंग, एकवचन माना जाएगा।

Step 5: Conclusion **उत्तर: विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, विशेष्य 'पुस्तक', एकवचन, स्त्रीलिंग**

Quick Tip to Solve: देखिए कि 'यह' अकेला आया है या किसी संज्ञा के साथ। संज्ञा के साथ आए तो सार्वनामिक विशेषण होता है।

5(III). उनके बेटे और पतोहू को तो मैंने देखा था। [1 mark]

Solution:

Step 1: पद-परिचय का नियम क्रिया का पद-परिचय करते समय हम उसका भेद (सकर्मक या अकर्मक), काल, वचन, लिंग और वाच्य बताते हैं। वह किसके अनुसार चल रही है, यह भी लिखा जा सकता है।

Step 2: शब्द की पहचान 'देखा था' काम के होने का बोध कराता है, यानी देखने का काम। जो शब्द काम का बोध कराए, वह क्रिया है।

Step 3: सकर्मक या अकर्मक प्रश्न पूछिए: मैंने क्या या किसे देखा? उत्तर है 'उनके बेटे और पतोहू को'। जब क्रिया का फल किसी कर्म पर पड़े, तो वह सकर्मक होती है। यहाँ कर्म है, इसलिए यह सकर्मक क्रिया है।

Step 4: काल, वचन और लिंग 'देखा था' में काम पहले हो चुका है, इसलिए भूतकाल है। 'था' का रूप एक के लिए और पुरुष के लिए है, इसलिए एकवचन और पुल्लिंग। 'बेटे और पतोहू को' के साथ 'को' लगा है, इसलिए क्रिया कर्म के अनुसार नहीं बदली और अपने सामान्य रूप में रही।

Step 5: वाच्य वाक्य का कर्ता 'मैंने' है और बात कर्ता को मुख्य रखकर कही गई है। इसलिए उत्तर-कुंजी के अनुसार वाच्य कर्तृवाच्य है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: क्रिया, सकर्मक क्रिया, भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य**

Quick Tip to Solve: पहले देखिए क्रिया का कर्म है या नहीं, फिर काल, वचन, लिंग और वाच्य एक-एक करके लिखिए।

5(IV). वर्षा के बाद धीरे-धीरे हरियाली बढ़ने लगी। [1 mark]

Solution:

Step 1: पद-परिचय का नियम जो शब्द क्रिया की विशेषता बताए, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। पद-परिचय में उसका भेद और जिस क्रिया की विशेषता बताई गई है, वह लिखी जाती है।

Step 2: शब्द की पहचान 'धीरे-धीरे' एक शब्द-युग्म है। यह किसी नाम या सर्वनाम की विशेषता नहीं बता रहा। यह बताता है कि हरियाली किस तरह बढ़ी।

Step 3: भेद तय करना क्रिया विशेषण चार तरह के होते हैं: कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक और रीतिवाचक। 'कैसे' का उत्तर देने वाला शब्द रीतिवाचक होता है। यहाँ प्रश्न 'हरियाली कैसे बढ़ी?' का उत्तर 'धीरे-धीरे' है, इसलिए यह रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

Step 4: विशेष्य क्रिया यह शब्द 'बढ़ने लगी' क्रिया की विशेषता बता रहा है। इसलिए पद-परिचय में यह भी लिखा जाएगा।

Step 5: Conclusion **उत्तर: क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'बढ़ने लगी' क्रिया की विशेषता**

Quick Tip to Solve: 'हरियाली कैसे बढ़ी?' पूछिए। इस प्रश्न का उत्तर जिस भेद का है, वही इस शब्द का भेद है।

5(V). वाह ! भारत ने महिला क्रिकेट विश्व कप जीत लिया। [1 mark]

Solution:

Step 1: पद-परिचय का नियम जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन या कारक के कारण नहीं बदलता, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय के चार भेद हैं: क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक।

Step 2: शब्द की पहचान 'वाह' के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगा है। यह शब्द वाक्य के बाकी हिस्से से अलग खड़ा है और किसी क्रिया या संज्ञा से नहीं जुड़ता। यह बोलने वाले की भावना बताता है।

Step 3: भेद तय करना हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा जैसी भावना प्रकट करने वाले अव्यय को विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। 'वाह' का रूप कभी नहीं बदलता, इसलिए वह अव्यय है, और भावना बताने के कारण विस्मयादिबोधक है।

Step 4: भाव की पहचान भारत की जीत की खबर पर 'वाह' कहने से खुशी प्रकट होती है। इसलिए यह प्रसन्नता सूचक विस्मयादिबोधक अव्यय है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: अव्यय, विस्मयादिबोधक अव्यय, प्रसन्नता सूचक**

Quick Tip to Solve: देखिए कि शब्द का रूप बदलता है या नहीं और वह कौन-सी भावना बता रहा है।

6(I). निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
खड़-खड़ करताल बजा, नाच रही बेसुध हवा।
(रेखांकित काव्य पंक्ति में अलंकार पहचान कर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Step 1: अलंकार की परिभाषा जहाँ निर्जीव वस्तुओं या प्रकृति के तत्वों में मनुष्य जैसे काम, भाव या व्यवहार का आरोप किया जाए, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

Step 2: रेखांकित पंक्ति देखना रेखांकित अंश है: 'नाच रही बेसुध हवा'। यहाँ हवा एक प्राकृतिक चीज़ है, जिसमें प्राण या भावना नहीं होती।

Step 3: लक्षण का मिलान पंक्ति में हवा को नाचते हुए और 'बेसुध' (होश खोई हुई) बताया गया है। नाचना और बेसुध होना मनुष्य के काम और दशा हैं। इसका अर्थ है कि कवि ने हवा पर मनुष्य का रूप आरोपित किया है।

Step 4: दूसरे अलंकारों से अंतर यहाँ 'जैसे' या 'मानो' जैसा कोई शब्द नहीं है, इसलिए उपमा या उत्प्रेक्षा नहीं है। दो वस्तुओं में एकरूपता भी नहीं बताई गई, इसलिए रूपक नहीं है। प्रकृति को मनुष्य की तरह चित्रित किया गया है, इसलिए यह मानवीकरण है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: मानवीकरण अलंकार**

Quick Tip to Solve: देखिए कि हवा जैसी बेजान चीज़ से कौन-से काम करवाए गए हैं।

6(II). सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?
(रेखांकित काव्य पंक्ति में अलंकार पहचान कर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Step 1: अलंकार की परिभाषा जब किसी वस्तु की तुलना दूसरी प्रसिद्ध वस्तु से उसके समान गुण के कारण की जाए और तुलना में 'सा', 'सी', 'जैसे', 'समान' जैसे शब्द आएँ, तब उपमा अलंकार होता है।

Step 2: चारों अंगों की पहचान उपमा के चार अंग होते हैं: उपमेय (जिसकी तुलना हो), उपमान (जिससे तुलना हो), वाचक शब्द और समान धर्म। इन्हें पंक्ति में खोजना है।

Step 3: पंक्ति में अंग खोजना यहाँ उपमेय 'सुख' है और उपमान 'स्वर्ग' है। वाचक शब्द 'सा' है। समान धर्म श्रेष्ठता या आनंद देने का गुण है।

Step 4: निष्कर्ष सुख की तुलना 'सा' शब्द की सहायता से स्वर्ग से की गई है, इसलिए यह उपमा अलंकार है। रूपक में 'सा' जैसा शब्द नहीं आता और उत्प्रेक्षा में 'मानो' जैसा शब्द आता है, इसलिए वे यहाँ नहीं बनते।

Step 5: Conclusion **उत्तर: उपमा अलंकार**

Quick Tip to Solve: तुलना बताने वाले शब्द 'सा' को पहचानिए और देखिए कि किसकी तुलना किससे हो रही है।

6(III). भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा॥
(रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए) [1 mark]

Solution:

Step 1: अलंकार की परिभाषा जहाँ किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए कि वह सामान्य लोक-व्यवहार या सच्चाई की सीमा पार कर जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

Step 2: पंक्तियों का अर्थ ये पंक्तियाँ शिव-धनुष के प्रसंग की हैं। इनका अर्थ है कि दस हज़ार राजा एक साथ धनुष को उठाने लगे, फिर भी वह अपनी जगह से हिला तक नहीं।

Step 3: बढ़ा-चढ़ाकर कथन खोजना दस हज़ार राजाओं का एक साथ एक धनुष उठाना और फिर भी उसका न हिलना, यह वास्तविक नहीं लगता। कवि ने धनुष के भारीपन को हद से ज़्यादा बढ़ाकर दिखाया है।

Step 4: निष्कर्ष यहाँ न तुलना का शब्द है, न आरोप, न मनुष्य जैसा व्यवहार। केवल बात को बहुत बढ़ाकर कहा गया है, इसलिए अलंकार अतिशयोक्ति है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: अतिशयोक्ति अलंकार**

Quick Tip to Solve: देखिए कि धनुष का भारीपन कितना बढ़ाकर बताया गया है। सामान्य बात से बहुत अधिक कथन किस अलंकार में होता है?

6(IV). रूपक अलंकार का एक उदाहरण उपयुक्त काव्य पंक्ति द्वारा लिखिए। [1 mark]

Solution:

Step 1: रूपक की परिभाषा जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप कर दिया जाए, यानी दोनों को एक ही मान लिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इसमें 'जैसे' या 'सा' जैसा तुलना वाला शब्द नहीं आता।

Step 2: उदाहरण चुनना ऐसी पंक्ति चुननी है जिसमें एक वस्तु को सीधे दूसरी वस्तु बता दिया गया हो। सूरदास की पंक्ति इसके लिए ठीक है: 'चरण-कमल बंदौं हरि राई।'

Step 3: लक्षण का मिलान इस पंक्ति में उपमेय 'चरण' है और उपमान 'कमल' है। 'चरण-कमल' का अर्थ है चरण ही कमल हैं। यहाँ 'सा' या 'जैसे' नहीं है, केवल दोनों को एक कर दिया गया है।

Step 4: पुष्टि चरण पर कमल का आरोप हुआ है, इसलिए पंक्ति रूपक अलंकार का सही उदाहरण है। ऐसी अन्य पंक्ति भी मान्य है, जैसे 'मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।'

Step 5: Conclusion **उत्तर: चरण-कमल बंदौं हरि राई।**

Quick Tip to Solve: रूपक में दो वस्तुओं को बिना 'जैसे/सा' के एक कर दिया जाता है। ऐसी प्रसिद्ध पंक्ति सोचिए।

6(V). उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण उपयुक्त काव्य पंक्ति द्वारा लिखिए। [1 mark]

Solution:

Step 1: उत्प्रेक्षा की परिभाषा जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें मानो, मनहुँ, जनु, जानो, मनु जैसे शब्द आते हैं।

Step 2: उदाहरण चुनना हमें ऐसी पंक्ति चाहिए जिसमें 'मानो' जैसा शब्द हो और एक वस्तु के बारे में कल्पना की गई हो। मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ ठीक हैं: 'उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा। मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥'

Step 3: लक्षण का मिलान यहाँ क्रोध से काँपते शरीर (उपमेय) की संभावना हवा से जगे हुए सागर (उपमान) के रूप में की गई है। कवि कहता है कि 'मानो' ऐसा हो गया, यानी पक्की बात नहीं, केवल कल्पना है।

Step 4: पुष्टि 'मानो' संभावना बताने वाला शब्द है। वह उपमा के 'सा' से अलग है, क्योंकि उपमा में पक्की तुलना होती है, जबकि यहाँ कल्पना है। इसलिए यह उत्प्रेक्षा का सही उदाहरण है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा। मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥**

Quick Tip to Solve: उत्प्रेक्षा में 'मानो', 'जनु', 'मनहुँ' जैसे शब्दों से कल्पना की जाती है। ऐसी पंक्ति सोचिए।

खंड - ग (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) (30 marks)

पाठ्य पुस्तक और पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित कुल 5 प्रश्न हैं, जिनमें उप प्रश्नों की संख्या 21 है | प्रश्नों में विकल्प दिए गए हैं |

7(I). निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

संस्कृत व्यक्ति की संतान को लेखक ने किसकी संज्ञा दी है? [1 mark]

(A) सुसंस्कृत मानव

(B) सभ्य मानव

(C) सुयोग्य मानव

(D) समृद्ध मानव

Correct Answer: (B) सभ्य मानव

Solution:

Concept:

- गद्यांश में लेखक ने 'संस्कृत' व्यक्ति और उसकी संतान का अंतर समझाया है।
- प्रश्न पूछता है कि संस्कृत व्यक्ति की संतान को लेखक ने कौन-सी संज्ञा (नाम) दी है।

Step 1: गद्यांश में प्रमाण खोजिए गद्यांश की पंक्ति है: 'वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता।'
यहाँ संतान को 'सभ्य' कहा गया है, 'संस्कृत' नहीं।

संतान को खोज नहीं करनी पड़ी। उसे सब कुछ पूर्वज से अनायास मिल गया। इसलिए वह सभ्य मानव कहलाती है।

Step 2: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) सुसंस्कृत मानव: गद्यांश में यह शब्द कहीं नहीं आया। 'संस्कृत' तो खोज करने वाले को कहा गया है, संतान को नहीं।
(C) सुयोग्य मानव: लेखक ने संतान की योग्यता की बात नहीं की। यह शब्द गद्यांश में नहीं है।
(D) समृद्ध मानव: बात धन-संपत्ति की नहीं, खोज और समझ की हो रही है। इसलिए यह भी गलत है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (B) सभ्य मानव**

Quick Tip to Solve: गद्यांश में संतान के लिए 'भले ही बन जाए' के बाद कौन-सा शब्द आया है, वह देखिए।

7(II). लेखक के अनुसार प्रस्तुत गद्यांश में एक 'संस्कृत' व्यक्ति कौन है? [1 mark]

(A) जो संस्कृत विषय का विशेषज्ञ हो

(B) जो नयी वस्तुओं का उपयोग करता हो

(C) जो अनेक बातों का ज्ञान रखता हो

(D) जो किसी नयी चीज की खोज करता हो

Correct Answer: (D) जो किसी नयी चीज की खोज करता हो

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि लेखक के अनुसार इस गद्यांश में 'संस्कृत' व्यक्ति कौन है।
- इसका उत्तर गद्यांश की पहली पंक्ति और दूसरे वाक्य में मिलता है।

Step 1: गद्यांश से प्रमाण पहली पंक्ति है: 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है।'
आगे लिखा है: 'जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।'
यानी जो नई चीज की खोज करे, वही संस्कृत है।

Step 2: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) संस्कृत विषय का विशेषज्ञ: यहाँ 'संस्कृत' भाषा की बात नहीं है। यह शब्द संस्कृति से बने गुण के लिए है।
(B) नयी वस्तुओं का उपयोग करने वाला: उपयोग करना और खोजना अलग बातें हैं। संतान भी वस्तु का उपयोग करती है, पर संस्कृत नहीं कहलाती।
(C) अनेक बातों का ज्ञान रखने वाला: आज का विद्यार्थी न्यूटन से अधिक जानता है, फिर भी न्यूटन जितना संस्कृत नहीं माना गया।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (D) जो किसी नयी चीज की खोज करता हो**

Quick Tip to Solve: गद्यांश की पहली पंक्ति में ही संस्कृत व्यक्ति का काम बताया गया है।

7(III). निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन : लेखक ने 'संस्कृत' व्यक्ति की संतान को 'संस्कृत' नहीं माना है।
कारण : 'संस्कृत' व्यक्ति की संतान ने किसी नयी चीज़ की खोज नहीं की, बल्कि उसे वह वस्तु अपने पूर्वजों से अनायास ही प्राप्त हो गई है। [1 mark]

(A) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(B) कथन और कारण दोनों ही ग़लत हैं।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

Correct Answer: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Solution:

Concept:

- इस प्रश्न में एक कथन और एक कारण दिया है। हमें तीन बातें जाँचनी हैं: कथन सही है या नहीं, कारण सही है या नहीं, और क्या कारण से कथन की व्याख्या होती है।

Step 1: कथन की जाँच कथन: लेखक ने 'संस्कृत' व्यक्ति की संतान को 'संस्कृत' नहीं माना है।
गद्यांश में लिखा है कि संतान 'सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता'। इसलिए कथन सही है।

Step 2: कारण की जाँच कारण: संस्कृत व्यक्ति की संतान ने किसी नयी चीज की खोज नहीं की, उसे वह वस्तु पूर्वजों से अनायास मिल गई है।
गद्यांश की पहली पंक्ति में यही लिखा है कि संतान को वह खोज अपने पूर्वज से अनायास प्राप्त हो जाती है। इसलिए कारण भी सही है।

Step 3: कारण और कथन का संबंध संतान संस्कृत इसीलिए नहीं मानी गई, क्योंकि उसने खुद कोई खोज नहीं की। अतः कारण ही कथन की सही व्याख्या करता है।

Step 4: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) कथन को गलत बताता है, जबकि वह गद्यांश के अनुसार सही है।
(B) दोनों को गलत बताता है, जबकि दोनों सही हैं।
(D) कहता है कि कारण व्याख्या नहीं करता। पर खोज न करना ही संस्कृत न कहलाने की वजह है, इसलिए यह भी गलत है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है**

Quick Tip to Solve: पहले कथन और कारण को अलग-अलग गद्यांश से मिलाइए, फिर देखिए कि कारण 'क्यों' का उत्तर देता है या नहीं।

7(IV). प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार कौन-सा कथन / कौन-से कथन सही हैं?
उचित विकल्प/विकल्पों का चयन कीजिए -
(i) न्यूटन गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार करने के कारण संस्कृत मानव कहलाए।
(ii) आज भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन के समान संस्कृत कह सकते हैं।
(iii) आज का विद्यार्थी न्यूटन के सिद्धांत के साथ-साथ अन्य बातों का भी ज्ञान रखता है।
(iv) आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को अधिक सभ्य नहीं माना जा सकता है।
विकल्प : [1 mark]

(A) कथन (i) और (ii) सही हैं

(B) केवल कथन (iii) सही है

(C) कथन (i) और (iv) सही हैं

(D) कथन (i) और (iii) सही हैं

Correct Answer: (D) कथन (i) और (iii) सही हैं

Solution:

Concept:

- चार कथन दिए हैं। हमें गद्यांश के अनुसार सही कथन चुनने हैं। हर कथन को अलग-अलग गद्यांश से जाँचना होगा।

Step 1: कथन (i) की जाँच कथन (i): न्यूटन गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार करने के कारण संस्कृत मानव कहलाए।
गद्यांश में लिखा है: 'न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था।' इसलिए (i) सही है।

Step 2: कथन (ii) की जाँच कथन (ii): आज भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन के समान संस्कृत कह सकते हैं।
गद्यांश के अंत में लिखा है: 'न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।' इसलिए (ii) गलत है।

Step 3: कथन (iii) की जाँच कथन (iii): आज का विद्यार्थी न्यूटन के सिद्धांत के साथ-साथ अन्य बातों का भी ज्ञान रखता है।
गद्यांश कहता है कि वह गुरुत्वाकर्षण से परिचित है और उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान है। इसलिए (iii) सही है।

Step 4: कथन (iv) की जाँच कथन (iv): आज के विद्यार्थी को अधिक सभ्य नहीं माना जा सकता।
गद्यांश में लिखा है कि हम उसे न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें। इसलिए (iv) गलत है।

Step 5: विकल्पों का मिलान सही कथन केवल (i) और (iii) हैं। यह मेल (D) से बैठता है।
(A) में (ii) गलत है, (B) में केवल (iii) लिखा है जबकि (i) भी सही है, और (C) में (iv) गलत है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (D) कथन (i) और (iii) सही हैं**

Quick Tip to Solve: हर कथन को गद्यांश की न्यूटन वाली पंक्तियों से अलग-अलग मिलाइए।

7(V). एक संस्कृत व्यक्ति में आम लोगों से अलग कौन-से गुण होते हैं?
उचित विकल्प/विकल्पों का चयन कीजिए -
(i) नई खोज करना
(ii) संस्कृति का सम्मान करना
(iii) साहसी और परिश्रमी होना
(iv) अपनी बुद्धि, विवेक के बल पर आविष्कार करना
विकल्प - [1 mark]

(A) विकल्प (i) और (iv) सही हैं

(B) केवल विकल्प (iii) सही है

(C) विकल्प (i) और (ii) सही हैं

(D) विकल्प (i), (ii) और (iv) सही हैं

Correct Answer: (A) विकल्प (i) और (iv) सही हैं

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि एक संस्कृत व्यक्ति में आम लोगों से अलग कौन-से गुण होते हैं। चार कथनों में से गद्यांश से मेल खाने वाले गुण चुनने हैं।

Step 1: कथन (i) की जाँच 'नई खोज करना': गद्यांश की पहली पंक्ति में लिखा है कि संस्कृत व्यक्ति नयी चीज की खोज करता है। इसलिए (i) सही है।

Step 2: कथन (ii) की जाँच 'संस्कृति का सम्मान करना': गद्यांश में संस्कृति के सम्मान की कोई बात नहीं है। यहाँ बात खोज और आविष्कार की है। इसलिए (ii) गलत है।

Step 3: कथन (iii) की जाँच 'साहसी और परिश्रमी होना': गद्यांश में साहस या परिश्रम का उल्लेख नहीं है। इसलिए (iii) गलत है।

Step 4: कथन (iv) की जाँच 'अपनी बुद्धि, विवेक के बल पर आविष्कार करना': गद्यांश में लिखा है कि जिसकी बुद्धि या

विवेक ने नए तथ्य का दर्शन किया, वही संस्कृत है। इसलिए (iv) सही है।

Step 5: विकल्पों का मिलान सही कथन (i) और (iv) हैं, जो विकल्प (A) में दिए हैं।
(B) में केवल (iii) है, जो गलत है। (C) में (ii) है, जो गलत है। (D) में (ii) है, इसलिए वह भी गलत है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (A) विकल्प (i) और (iv) सही हैं**

Quick Tip to Solve: वही गुण चुनिए जो गद्यांश के पहले वाक्य और दूसरे वाक्य में लिखे हैं।

8(I). निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए :

'बुढ़ापा आ गया था, किंतु टेक वही जवानीवाली' - 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 marks]

Solution:

Step 1: पंक्ति का संदर्भ समझिए यह कथन 'बालगोबिन भगत' पाठ से है। बालगोबिन भगत खेतिहर गृहस्थ थे, पर उनका आचरण साधु जैसा था।
कथन में 'बुढ़ापा' शरीर की कमज़ोरी को दिखाता है और 'टेक वही जवानीवाली' उनके पुराने नियमों की दृढ़ता को।

Step 2: पाठ के मुख्य बिंदु 1. वृद्ध होने पर भी उनके नित्य-नियम में कोई परिवर्तन नहीं आया।
2. वे हर वर्ष की तरह इस बार भी जीवन के अंतिम समय में गंगा-स्नान करने गए।
3. रास्ते में वे उपवास रखते थे और किसी से सहायता नहीं लेते थे।
4. बुढ़ापे में भी किसी का सहारा लेना उन्हें मंजूर नहीं था।
अंक पाने के लिए इनमें से कम से कम दो बिंदु लिखना ज़रूरी है।

Step 3: उत्तर कैसे लिखें पहले कथन का सीधा आशय लिखिए, फिर दो बिंदु जोड़िए। पूरा उत्तर 25-30 शब्दों में रखिए।

Step 4: आदर्श उत्तर बालगोबिन भगत बूढ़े हो गए थे, पर उनके नित्य-नियम नहीं बदले। वे इस वर्ष भी गंगा-स्नान को गए, उपवास रखा और किसी का आश्रय नहीं लिया। यही टेक जीवन भर रही।

Step 5: Conclusion **उत्तर: बालगोबिन भगत बुढ़ापे में भी अपने नियमों और आदर्श आचरण पर अडिग रहे।**

Quick Tip to Solve: 'टेक' का अर्थ है नियम पर डटे रहना। पाठ में गंगा-स्नान, उपवास और बिना सहारे रहने वाली बातें याद कीजिए।

8(II). लेखिका मन्नू भंडारी को साधारण से असाधारण बनाने में 'शीला अग्रवाल' की भूमिका पर 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए। [2 marks]

Solution:

Step 1: प्रश्न का संदर्भ 'एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी की आत्मकथा का अंश है। इसमें उनकी हिंदी की अध्यापिका शीला अग्रवाल का विशेष स्थान है।
प्रश्न पूछता है कि शीला अग्रवाल ने लेखिका को साधारण से असाधारण बनाने में क्या योगदान दिया।

Step 2: पाठ के मुख्य बिंदु 1. शीला जी के साथ लंबी बहसों से लेखिका को साहित्य समझने की दृष्टि मिली।
2. उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण लेखकों को पढ़ने का सुझाव दिया, जिससे लेखिका की सोच और मनन सँवरा।
3. उन्होंने लेखिका को साहसी और आत्मविश्वासी बनाया।
4. उन्होंने लेखिका को देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदार बनाया।
इनमें से कोई दो बिंदु लिखने से पूरे अंक मिलते हैं।

Step 3: उत्तर की बनावट शुरू में शीला अग्रवाल का परिचय दीजिए, फिर दो योगदान लिखिए। शब्द सीमा 25-30 रखिए।

Step 4: आदर्श उत्तर हिंदी अध्यापिका शीला अग्रवाल ने मन्नू भंडारी को साहित्य समझने की दृष्टि दी और अच्छे लेखकों को पढ़ने का सुझाव दिया। उन्होंने उन्हें साहसी बनाकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय किया।

Step 5: Conclusion **उत्तर: शीला अग्रवाल ने साहित्य की समझ, पढ़ने की प्रेरणा, साहस और स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी देकर मन्नू भंडारी को निखारा।**

Quick Tip to Solve: शीला अग्रवाल के दो काम सोचिए: साहित्य में मार्गदर्शन और आंदोलन में प्रेरणा।

8(III). कैसे कहा जा सकता है कि बिस्मिल्ला खाँ साहब सच्चे अर्थों में भारत रत्न थे। 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर लिखिए। [2 marks]

Solution:

Step 1: प्रश्न का संदर्भ 'नौबतखाने में इबादत' शहनाई सम्राट बिस्मिल्ला खाँ पर लिखा गया व्यक्ति-चित्र है।
भारत रत्न केवल बड़ा सम्मान नहीं है। हमें दिखाना है कि खाँ साहब का जीवन ऐसे सम्मान के लायक क्यों था।

Step 2: पाठ के मुख्य बिंदु 1. उनमें भारतीय जीवन-मूल्य थे: सांप्रदायिक सद्भावना, देशभक्ति, विनम्रता, सादगी, हुनर और साधना।
2. भारत रत्न, पद्मविभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार जैसे सम्मान पाकर भी उन्हें घमंड नहीं हुआ।
3. वे बिना धन के लालच के जीवन भर सादगी से सुरों की साधना करते रहे।
कोई दो बिंदु लिखने से पूरे अंक मिलते हैं।

Step 3: उत्तर की बनावट एक वाक्य में गुण, दूसरे में घमंड न होना या साधना। शब्द 25-30 के बीच रखिए।

Step 4: आदर्श उत्तर बिस्मिल्ला खाँ में सांप्रदायिक सद्भावना, देशभक्ति, विनम्रता और सादगी जैसे भारतीय जीवन-मूल्य थे। भारत रत्न पाकर भी घमंड उन्हें छू न सका। वे लालच के बिना सुरों की साधना करते रहे।

Step 5: Conclusion **उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ भारतीय जीवन-मूल्यों, विनम्रता, सादगी और निष्काम साधना के कारण सच्चे अर्थों में भारत रत्न थे।**

Quick Tip to Solve: खाँ साहब के गुण (विनम्रता, सादगी) और उनके घमंड-रहित व्यवहार पर ध्यान दीजिए।

8(IV). यदि लेखक ने खीरा खा लिया होता तो क्या नवाब साहब भी खीरा खा लेते? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। [2 marks]

Solution:

Step 1: प्रश्न का संदर्भ 'लखनवी अंदाज़' में लेखक एक डिब्बे में नवाब साहब से मिलता है। नवाब साहब खीरे काटकर, नमक-मिर्च लगाकर सजाते हैं, पर खाते नहीं। वे केवल सूँघकर खिड़की से फेंक देते हैं।
प्रश्न पूछता है कि अगर लेखक खीरा खा लेता तो क्या नवाब साहब भी खा लेते।

Step 2: पाठ के मुख्य बिंदु 1. यदि लेखक खीरा खा लेता, तो संभव है कि नवाब साहब भी खा लेते।
2. नवाब साहब अपनी शान और आत्म-सम्मान को बनाए रखना चाहते थे।
3. लेखक के सामने खीरा खाना उन्हें अपनी नवाबी शिष्टता के खिलाफ लगा।
4. असल में वे खीरे का आनंद लेना चाहते थे, पर समाज में नवाबी स्थिति के कारण नहीं खा पाए।
इनमें से दो बिंदु तर्क के साथ लिखिए।

Step 3: तर्क कैसे दें पहले उत्तर लिखिए कि हाँ, संभव है। फिर कारण दीजिए कि वे दिखावे और शान की वजह से रुके थे।

Step 4: आदर्श उत्तर हाँ, संभव है। नवाब साहब खीरा खाना चाहते थे, पर नवाबी शान और शिष्टता के कारण नहीं खा सके। लेखक के खाने पर उन्हें दिखावा छोड़ने का बहाना मिल जाता।

Step 5: Conclusion **उत्तर: हाँ, लेखक के खा लेने पर नवाब साहब भी खीरा खा लेते, क्योंकि वे दिखावे और नवाबी शान के कारण ही नहीं खा रहे थे।**

Quick Tip to Solve: सोचिए कि नवाब साहब के न खाने की असली वजह भूख थी या शान बनाए रखने का दिखावा।

9(I). निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

'अट नहीं रही है' कविता में किस ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है ? [1 mark]

(A) चैत्र माह में आने वाली ग्रीष्म ऋतु का वर्णन

(B) चैत्र माह में आने वाली वर्षा ऋतु का वर्णन

(C) फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन

(D) फागुन माह में आने वाली वर्षा ऋतु का वर्णन

Correct Answer: (C) फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन

Solution:

Step 1: कविता को पहचानिए यह कविता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'अट नहीं रही है' है। इसमें फागुन महीने की सुंदरता का वर्णन है।

Step 2: कविता से प्रमाण कविता में फागुन की आभा, पत्तों से लदी डाल, कहीं हरी कहीं लाल पत्तियाँ और सुगंध भरी फूलों की माला का चित्र है।
फागुन का महीना फरवरी-मार्च में आता है। यह समय वसंत ऋतु का होता है, जब पेड़ों पर नए पत्ते और फूल आते हैं।

Step 3: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) चैत्र की ग्रीष्म ऋतु: कविता का महीना फागुन है, चैत्र नहीं। कविता में गर्मी का कोई वर्णन नहीं है।
(B) चैत्र की वर्षा ऋतु: यह भी गलत है। न महीना सही है, न ऋतु। कविता में वर्षा का कोई वर्णन नहीं है।
(D) फागुन की वर्षा ऋतु: महीना सही है, पर ऋतु गलत है। कविता में बादल या बारिश का कोई उल्लेख नहीं है।

Step 4: Conclusion **उत्तर: (C) फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन**

Quick Tip to Solve: कविता में आए महीने का नाम देखिए और सोचिए कि वह कौन-सी ऋतु में पड़ता है।

9(II). फागुन माह में प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं?
सही विकल्प/विकल्पों का चयन कीजिए -
(i) नव पल्लवों से युक्त डालियाँ
(ii) अनगिनत रंग-बिरंगे सुगंधित पुष्प
(iii) प्रकृति का सौंदर्य चरम सीमा पर
(iv) आकाश में बादलों का छाना
विकल्प - [1 mark]

(A) कथन (i) और (ii) सही हैं

(B) केवल कथन (iii) सही है

(C) कथन (i) और (iv) सही हैं

(D) कथन (i), (ii) और (iii) सही हैं

Correct Answer: (D) कथन (i), (ii) और (iii) सही हैं

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि फागुन माह में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन होते हैं। चार कथनों में से कविता से मेल खाने वाले कथन चुनने हैं।

Step 1: कथन (i) की जाँच 'नव पल्लवों से युक्त डालियाँ': कविता में 'पत्तों से लदी डाल, कहीं हरी, कहीं लाल' लिखा है। इसमें नए पत्तों से भरी डालियों का चित्र है। इसलिए (i) सही है।

Step 2: कथन (ii) की जाँच 'अनगिनत रंग-बिरंगे सुगंधित पुष्प': कविता में 'मंद-गंध-पुष्प-माल' आया है और 'घर-घर भर देते हो' से गंध फैलने का संकेत है। इसलिए (ii) सही है।

Step 3: कथन (iii) की जाँच 'प्रकृति का सौंदर्य चरम सीमा पर': कविता की टेक है 'अट नहीं रही है', 'पट नहीं रही है'। सौंदर्य इतना अधिक है कि समा नहीं रहा। इसलिए (iii) सही है।

Step 4: कथन (iv) की जाँच 'आकाश में बादलों का छाना': कविता में बादलों का कोई उल्लेख नहीं है। 'उड़ने को नभ में' पंक्ति पक्षियों जैसी उड़ान की कल्पना है। इसलिए (iv) गलत है।

Step 5: विकल्पों का मिलान सही कथन (i), (ii) और (iii) हैं। यह मेल (D) से बैठता है।
(A) में (iii) छूट गया है, (B) में केवल (iii) है और (C) में गलत कथन (iv) है।

Step 6: Conclusion **उत्तर: (D) कथन (i), (ii) और (iii) सही हैं**

Quick Tip to Solve: हर कथन को कविता की पंक्तियों से मिलाइए। बादलों का ज़िक्र कविता में खोजिए।

9(III). निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :
कथन : आभा फागुन की तन सट नहीं रही है।
कारण : फाल्गुन की सुंदरता इतनी अधिक है कि वह धरती पर समा नहीं पा रही है और चारों ओर बिखरी हुई है।
विकल्प : [1 mark]

(A) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(B) कथन और कारण दोनों ही ग़लत हैं।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

Correct Answer: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Solution:

Concept:

- कथन: आभा फागुन की तन सट नहीं रही है। कारण: फाल्गुन की सुंदरता इतनी अधिक है कि वह धरती पर समा नहीं पा रही है और चारों ओर बिखरी हुई है।
- हमें देखना है कि कथन सही है या नहीं, कारण सही है या नहीं, और कारण कथन को समझाता है या नहीं।

Step 1: कथन की जाँच कविता की पहली पंक्तियाँ हैं: 'अट नहीं रही है, आभा फागुन की तन सट नहीं रही है।' यानी फागुन की आभा शरीर से सट नहीं पा रही, बहुत ज़्यादा है। इसलिए कथन सही है।

Step 2: कारण की जाँच कवि बार-बार कहता है कि सौंदर्य इतना है कि 'अट नहीं रही है', 'पट नहीं रही है'। पूरी धरती पर शोभा बिखरी है। इसलिए कारण भी सही है।

Step 3: कारण से कथन की व्याख्या आभा के सट न पाने की वजह यही है कि सुंदरता बहुत अधिक है और हर ओर फैली है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

Step 4: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) में कथन को गलत कहा गया है, पर वह कविता की पहली पंक्ति के अनुसार सही है।
(B) में दोनों को गलत कहा गया है, जो ठीक नहीं है।
(D) में कहा गया है कि कारण व्याख्या नहीं करता। पर अत्यधिक सुंदरता ही आभा के समा न पाने का कारण है, इसलिए (D) गलत है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है**

Quick Tip to Solve: पहले देखिए कि कविता की टेक 'अट नहीं रही है' किस बात की ओर इशारा करती है।

9(IV). यह कविता कवि के किस प्रेम को दर्शाती है? [1 mark]

(A) देश प्रेम

(B) प्रकृति प्रेम

(C) कला प्रेम

(D) मानव प्रेम

Correct Answer: (B) प्रकृति प्रेम

Solution:

Concept:

- प्रश्न पूछता है कि कविता कवि के किस प्रेम को दिखाती है। यानी कविता का मूल विषय क्या है।

Step 1: कविता के विषय को पहचानिए पूरी कविता में फागुन की शोभा, डाली, पत्ते, फूलों की गंध और सौंदर्य का वर्णन है। कवि प्रकृति की सुंदरता में डूबा हुआ है।
'आँख हटाता हूँ तो हट नहीं रही है' पंक्ति बताती है कि कवि प्रकृति से नज़र हटा नहीं पाता।
इसलिए यह कविता प्रकृति प्रेम की कविता है।

Step 2: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (A) देश प्रेम: कविता में देश या देशभक्ति की कोई बात नहीं है।
(C) कला प्रेम: कविता में किसी कला, जैसे चित्र या संगीत, की चर्चा नहीं है।
(D) मानव प्रेम: कविता में मनुष्यों के आपसी प्रेम का वर्णन नहीं है।

Step 3: Conclusion **उत्तर: (B) प्रकृति प्रेम**

Quick Tip to Solve: सोचिए कि कविता में किस चीज़ का वर्णन सबसे अधिक है।

9(V). 'आँख हटाता हूँ तो हट नहीं रही है' - कवि किसकी ओर से अपनी आँख हटा नहीं पा रहा है? [1 mark]

(A) प्राकृतिक सौंदर्य की ओर से

(B) काले बादलों की ओर से

(C) ऊँचे पहाड़ों की ओर से

(D) हरे-भरे पेड़ों की ओर से

Correct Answer: (A) प्राकृतिक सौंदर्य की ओर से

Solution:

Step 1: पंक्ति का संदर्भ पंक्ति है: 'आँख हटाता हूँ तो हट नहीं रही है।' यह कविता के पहले भाग में आती है, जहाँ फागुन की सुंदरता का वर्णन है।

Step 2: पंक्ति का भाव कवि कहता है कि वह जब भी नज़र हटाने की कोशिश करता है, उसकी नज़र हटती नहीं। कारण है चारों ओर बिखरी फागुन की प्राकृतिक शोभा।
कवि उस सुंदरता से इतना मोहित है कि उसे छोड़ नहीं पाता।

Step 3: अन्य विकल्प क्यों गलत हैं (B) काले बादलों की ओर से: कविता में काले बादलों का कोई ज़िक्र नहीं है।
(C) ऊँचे पहाड़ों की ओर से: पहाड़ों का भी कविता में कोई वर्णन नहीं है।
(D) हरे-भरे पेड़ों की ओर से: पेड़ों की डालियाँ कविता में हैं, पर कवि केवल पेड़ों से नहीं, पूरी प्राकृतिक शोभा से बँधा है।
इसलिए सबसे उपयुक्त उत्तर (A) है।

Step 4: Conclusion **उत्तर: (A) प्राकृतिक सौंदर्य की ओर से**

Quick Tip to Solve: पंक्ति के पास आई 'शोभा-श्री' जैसी बातों पर ध्यान दीजिए।

10(I). निर्धारित कविताओं के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए :

'सूरदास अब धीर धरहिं क्यों ?' - इस प्रश्न में निहित गोपियों की व्यथा का चित्रण 'सूरदास के पद' के आधार पर संक्षेप में लिखिए । [2 marks]

Solution:

Concept:

- यह पंक्ति सूरदास के पद की अंतिम पंक्ति से ली गई है। इसे गोपियाँ उद्धव से कहती हैं।
- "धीर धरहिं क्यों" का अर्थ है "धैर्य कैसे रखें"। इस प्रश्न में गोपियों की विरह-वेदना अपने चरम पर दिखती है।
- हमें पद की बातों के आधार पर उनकी व्यथा को संक्षेप में लिखना है।

Step 1: पद से मुख्य बातें निकालना 1. "अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही" - कृष्ण के लौटने की अवधि और आशा के सहारे गोपियाँ तन-मन की पीड़ा सहती रहीं।
2. "अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही" - उद्धव का योग-संदेश सुनकर उनकी विरह की जलन और बढ़ गई।
3. "चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही" - वे जिनसे रक्षा की पुकार करना चाहती थीं, उन्हीं की ओर से योग की धारा बह आई।
4. "मरजादा न लही" - सामाजिक मर्यादा टूट चुकी है और हर संभव गुहार लगाने पर भी सब व्यर्थ रहा।

Step 2: उत्तर की रूपरेखा तय करना प्रश्न 2 अंक का है और शब्द-सीमा 25-30 शब्द है। इसलिए किन्हीं दो मुख्य बिंदुओं को सीधे और संक्षेप में लिखना ठीक रहेगा।
पहला बिंदु: कृष्ण के आने की आशा में सही गई पीड़ा। दूसरा बिंदु: योग-संदेश से बढ़ी विरह की जलन।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 25-30 शब्द) गोपियाँ कृष्ण के आने की आशा में तन-मन की पीड़ा सहती रहीं। उद्धव के योग-संदेश ने विरह की जलन और बढ़ा दी। मर्यादा भी टूट गई, इसलिए वे धैर्य कैसे धरें।

Step 4: अंकों का बँटवारा मूल्यांकन में किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर सही बिंदु पर 1 अंक मिलता है,

कुल 2 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: गोपियों की व्यथा निराशा, आकुलता और भावनात्मक पीड़ा से भरी है, इसी कारण वे धैर्य नहीं रख पा रहीं।**

Quick Tip to Solve: पद की पंक्तियों 'अवधि अधार आस आवन की' और 'बिरहिनि बिरह दही' को याद करके गोपियों की आशा, निराशा और विरह की जलन लिखिए।

10(II). "क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?" 'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर लिखिए कि कवि 'दूसरों की सुनकर मौन रहना' क्यों श्रेयस्कर मानता है? [2 marks]

Solution:

Concept:

- यह पंक्ति जयशंकर प्रसाद की कविता "आत्मकथ्य" से ली गई है। मित्र कवि से आत्मकथा लिखने का आग्रह करते हैं।
- कवि उनसे उलटा प्रश्न पूछता है कि क्या यह अच्छा नहीं कि मैं दूसरों की बातें सुनकर मौन रहूँ। हमें यह बताना है कि कवि मौन रहने को श्रेयस्कर क्यों मानता है।

Step 1: कविता से कारण खोजना 1. कवि कहता है कि उसके छोटे से जीवन में सुनाने लायक कोई बड़ी उपलब्धि है ही नहीं, इसलिए सुनाने को कुछ खास नहीं।
2. उसकी व्यथा अभी थककर सोई है। उसे जगाकर कहने से केवल पुराना दुख ताज़ा होगा।
3. उसकी भोली आत्मकथा सुनकर मित्रों को कोई सुख या लाभ नहीं मिलेगा। वह दूसरों के उपहास का विषय भी बन सकती है।
4. औरों की कहानियाँ सुनना उसे अपनी दुर्बलताएँ खोलने से अधिक सार्थक लगता है।

Step 2: उत्तर की रूपरेखा तय करना शब्द-सीमा 25-30 शब्द की है। इसलिए "सुनाने लायक कुछ नहीं" और "व्यथा दूसरों का मनोरंजन न बने" जैसे दो बिंदु लिखना काफ़ी है।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 25-30 शब्द) कवि के छोटे जीवन में सुनाने लायक कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है। वह नहीं चाहता कि उसकी भोली व्यथा दूसरों के उपहास का विषय बने, इसलिए मौन उसे श्रेयस्कर लगता है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर सही बिंदु पर 1 अंक, कुल 2 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: कवि को मौन रहना इसलिए श्रेयस्कर लगता है कि उसके पास सुनाने लायक बड़ी उपलब्धि नहीं है और वह अपनी व्यथा का मज़ाक नहीं बनने देना चाहता।**

Quick Tip to Solve: कवि के छोटे जीवन, सुनाने लायक उपलब्धि के अभाव और व्यथा के उपहास के डर पर ध्यान दीजिए।

10(III). 'यह दंतुरित मुसकान' कविता में बच्चे और कवि के बीच का संबंध मुख्यतः संवादहीन है, फिर भी अत्यंत गहन और भावपूर्ण है । 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए । [2 marks]

Solution:

Concept:

- यह प्रश्न नागार्जुन की कविता "यह दंतुरित मुसकान" पर है। इसमें कवि एक छोटे बच्चे की नई-नई दाँत निकली मुसकान देखता है।
- कथन कहता है कि बच्चे और कवि के बीच शब्दों में बात नहीं होती, फिर भी संबंध गहरा और भावपूर्ण है। हमें इसे तर्क देकर समझाना है।

Step 1: कविता से तर्क जुटाना 1. पूरी कविता में बच्चा कुछ नहीं बोलता। उसकी मुसकान ही उसकी भाषा है, और वही कवि तक भाव पहुँचाती है।
2. यह मुसकान इतनी मोहक है कि कवि को लगता है, इसे छूकर पत्थर भी पिघल जाए और कमल बनकर खिल उठे। इससे कवि को अपार सुंदरता ("छवि") का अनुभव होता है।

3. कवि अपने को “अतिथि'' और “अन्य'' कहता है। बच्चा उसे अपलक देखता है, शायद पहचान नहीं पाता, फिर भी दोनों के बीच प्रेम बन जाता है।
4. कवि बच्चे और उसकी माँ दोनों को धन्य कहता है, जिससे संबंध की गहराई झलकती है।

Step 2: उत्तर की रूपरेखा तय करना उत्तर में पहले कथन के “संवादहीन'' भाग को लिखें, फिर बताएँ कि मुसकान से संबंध कैसे गहरा बनता है। यही तर्कपूर्ण उत्तर होगा।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 25-30 शब्द) बच्चा बोलता नहीं, पर उसकी निश्छल मुसकान और अपलक दृष्टि सीधे कवि के हृदय को छू लेती है। शब्दों के बिना भी यह जुड़ाव गहरा और भावपूर्ण बन जाता है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर बिंदु पर 1 अंक, कुल 2 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: बच्चे की दंतुरित मुसकान शब्दों के बिना ही कवि के हृदय से जुड़ जाती है, इसलिए यह संबंध संवादहीन होकर भी गहन और भावपूर्ण है।**

Quick Tip to Solve: बच्चे की मुसकान, उसकी अपलक दृष्टि और कवि के 'अतिथि' होने के भाव से तर्क बनाइए।

10(IV). ‘और यह कि फिर से गाया जा सकता है गाया जा चुका राग’ - यह पंक्ति संगतकार के स्वर में किस भावना और विश्वास को व्यक्त करती है?
‘संगतकार' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [2 marks]

Solution:

Concept:

- यह पंक्ति मंगलेश डबराल की कविता “संगतकार'' के अंतिम भाग से ली गई है। संगतकार मुख्य गायक के साथ गाने वाला सहायक कलाकार है।
- पंक्ति में वह कहता है कि गाया जा चुका राग फिर से गाया जा सकता है। हमें यह बताना है कि यह किस भावना और विश्वास को दिखाती है।

Step 1: कविता से मुख्य बातें निकालना 1. जब मुख्य गायक अंतरे की जटिल तानों में खो जाता है या थककर निराश हो जाता है, तब संगतकार स्थायी को संभाले रखता है।
2. उसकी आवाज़ में हिचक और संकोच सुनाई देता है। कवि इसे विफलता नहीं, उसकी मनुष्यता मानता है।
3. संगतकार अपने स्वर से गायक को याद दिलाता है कि राग टूटा नहीं है। वह दोबारा शुरू किया जा सकता है।
4. इस तरह वह निराशा के क्षण में गायक को आशा और भरोसा देता है।

Step 2: उत्तर की रूपरेखा तय करना पहले बताएँ कि पंक्ति आशा और पुनः प्रयास की भावना दिखाती है। फिर लिखें कि संगतकार गायक को फिर से शुरू करने का विश्वास देता है।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 25-30 शब्द) यह पंक्ति आशा और नए सिरे से शुरुआत के विश्वास को प्रकट करती है। संगतकार थके या निराश गायक को भरोसा देता है कि बीता राग फिर गाया जा सकता है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर बिंदु पर 1 अंक, कुल 2 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: पंक्ति में आशा, हार न मानने की भावना और दोबारा शुरू करने का विश्वास व्यक्त हुआ है।**

Quick Tip to Solve: संगतकार का काम गायक को सहारा देना है। सोचिए कि 'फिर से गाया जा सकता है' कहकर वह कौन-सा भरोसा देता है।

11(I). पूरक पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए :

'माता का अँचल' पाठ में वर्णित बच्चों के 'खेती के खेल' से ग्रामीण जीवन की किन सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं का पता चलता है? [4 marks]

Solution:

Concept:

- यह प्रश्न शिवपूजन सहाय के पाठ "माता का अँचल" पर है। इसमें भोलानाथ और उसके साथी बच्चे कई खेल खेलते हैं, जिनमें "खेती का खेल" भी है।
- हमें यह बताना है कि इस बाल-खेल से गाँव की कौन-सी सामाजिक और आर्थिक सच्चाइयाँ दिखती हैं। प्रश्न 4 अंक का है और उत्तर 50-60 शब्द में लिखना है।

Step 1: पाठ से खेल का ब्योरा याद करना 1. बच्चों ने घिरनी से कुआँ, मूँज की रस्सी से रस्सा और कंकड़ों को बीज बनाकर खेती की पूरी प्रक्रिया नकली रूप में दोहराई।
2. खेती के काम गाते हुए किए गए। "ऊँच-नीच में बई कियारी जो उपजी सो भई हमारी" जैसे लोकगीत वे गा रहे थे।
3. वे फसल काटते, उसे रौंदते और कसोरे से ओसाते थे।

Step 2: ब्योरे से अर्थ निकालना खेल से पता चलता है कि गाँव की अर्थव्यवस्था खेती पर टिकी थी। बच्चे बचपन से ही खेती की हर क्रिया देखकर सीखते थे।
वे संघर्ष, सहयोग और उत्सव, तीनों से परिचित थे। यह सामाजिक पहलू है।
गीत का "ऊँच-नीच" भाव भूमि की असमानता और सामूहिक श्रम की ओर भी संकेत करता है।
इसलिए यह खेल ग्रामीण जीवन का एक छोटा दस्तावेज़ है।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 50-60 शब्द) बच्चों ने घिरनी, रस्सी और कंकड़ों से खेती का पूरा खेल रचा। इससे पता चलता है कि गाँव की आर्थिक संरचना खेती पर टिकी थी। बच्चे बचपन से ही संघर्ष, सहयोग और उत्सव से परिचित थे। लोकगीत में छिपा "ऊँच-नीच" भूमि की विषमता और सामूहिक श्रम की ओर भी इशारा करता है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं चार बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर सही बिंदु पर 1 अंक, कुल 4 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: खेती का खेल बताता है कि ग्रामीण जीवन खेती पर आधारित था और बच्चे बचपन से श्रम, सहयोग और लोकगीतों से जुड़े थे।**

Quick Tip to Solve: खेल में बच्चों ने क्या-क्या नकल की और कौन-सा लोकगीत गाया, यह याद करके उससे गाँव की अर्थव्यवस्था और समाज का अर्थ निकालिए।

11(II). 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर लिखिए कि सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिकों के जीवन और उनके योगदान पर लेखिका की टिप्पणी क्या प्रतिबिंबित करती है? [4 marks]

Solution:

Concept:

- यह प्रश्न मधु कांकरिया के यात्रा-वृत्तांत "साना-साना हाथ जोड़ि" पर है। लेखिका सिक्किम की यात्रा में कटाओ और यूमथांग जैसी जगहों पर जाती हैं।
- वहाँ वे सीमा पर तैनात सैनिकों के जीवन को देखती हैं। हमें बताना है कि उन पर लेखिका की टिप्पणी क्या दर्शाती है।

Step 1: पाठ से मुख्य बातें याद करना 1. लेखिका सैनिकों के संघर्ष को "मौत को झुठलाने" वाला बताती हैं।
2. कटाओ जैसे दुर्गम इलाके में तापमान शून्य से 15 डिग्री सेल्सियस नीचे चला जाता है, फिर भी सैनिक डटे रहते हैं।
3. एक सैनिक कहता है कि आप चैन की नींद सो सकें, इसीलिए हम यहाँ पहरा दे रहे हैं। यह वाक्य लेखिका को भीतर तक हिला देता है।
4. छावनी पर लिखा नारा "वी गिव अवर टुडे फॉर योर टुमारो" उनके समर्पण का प्रतीक है।

Step 2: टिप्पणी से अर्थ निकालना लेखिका के कथन से सैनिकों के अदम्य साहस और त्याग का पता चलता है।
वे नागरिक आराम और सैन्य जीवन के कष्टों के बीच की खाई भी दिखाती हैं।
इस टिप्पणी में उनकी राष्ट्रीय चेतना और सैनिकों के प्रति कृतज्ञता भी झलकती है।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 50-60 शब्द) लेखिका सैनिकों के जीवन को मौत को झुठलाने वाला संघर्ष मानती हैं। कटाओ में शून्य से 15 डिग्री नीचे तापमान में भी वे डटे रहते हैं। उनके त्याग से ही हम चैन की नींद सोते हैं। यह टिप्पणी लेखिका की राष्ट्रीय चेतना और सैनिकों के प्रति कृतज्ञता को प्रकट करती है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं चार बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर बिंदु पर 1 अंक, कुल 4 अंक।

Step 5: Conclusion **उत्तर: टिप्पणी सैनिकों के साहस, त्याग और समर्पण के साथ लेखिका की कृतज्ञता और राष्ट्रीय चेतना को दर्शाती है।**

Quick Tip to Solve: कटाओ का ठंडा मौसम, सैनिक का वाक्य 'आप चैन की नींद सो सकें' और छावनी का नारा याद कीजिए।

11(III). 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर बताइए कि भीतरी विवशता क्या होती है ? लेखक अज्ञेय ने इसे स्पष्ट करने के लिए किसकी चर्चा की है? [4 marks]

Solution:

Concept:

- यह प्रश्न अज्ञेय के निबंध "मैं क्यों लिखता हूँ" पर है। इसमें प्रश्न के दो भाग हैं: भीतरी विवशता क्या होती है, और अज्ञेय ने इसे समझाने के लिए किसकी चर्चा की है।
- दोनों भागों का उत्तर 50-60 शब्द में देना है।

Step 1: पाठ से मुख्य बातें याद करना 1. लेखक के अनुसार भीतरी विवशता मन की वह प्रबल अनुभूति और बेचैनी है, जो उसे अपनी अनुभूति शब्दों में व्यक्त करने के लिए विवश करती है।
2. लेखक के भीतर कुछ ऐसी अनुभूतियाँ होती हैं, जिन्हें वह दूसरों तक पहुँचाना चाहता है।
3. जब तक वह उन्हें लिखकर व्यक्त नहीं कर देता, तब तक उसके मन को शांति नहीं मिलती।
4. इस बात को स्पष्ट करने के लिए अज्ञेय अपनी प्रसिद्ध कविता "हिरोशिमा" की चर्चा करते हैं।
5. वे बताते हैं कि कविता लिखना उनके लिए किसी बाहरी दबाव का परिणाम नहीं, बल्कि भीतर की अनुभूति को व्यक्त करने की आवश्यकता थी।

Step 2: उत्तर की रूपरेखा तय करना पहले भीतरी विवशता का अर्थ लिखें, फिर बताएँ कि मन को शांति लिखने के बाद ही मिलती है। अंत में हिरोशिमा कविता का नाम और उसका संकेत दें।

Step 3: आदर्श उत्तर (लगभग 50-60 शब्द) भीतरी विवशता मन की वह तीव्र बेचैनी है, जो लेखक को अपनी अनुभूति शब्दों में कहने के लिए विवश करती है। जब तक वह उसे लिखकर व्यक्त नहीं कर देता, उसे शांति नहीं मिलती। अज्ञेय ने इसे समझाने के लिए अपनी कविता "हिरोशिमा" की चर्चा की है।

Step 4: अंकों का बँटवारा किन्हीं चार बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है। हर बिंदु पर 1 अंक, कुल 4 अंक। "हिरोशिमा" का उल्लेख अनिवार्य है।

Step 5: Conclusion **उत्तर: भीतरी विवशता लेखक की वह आंतरिक बेचैनी है जो उसे लिखने को प्रेरित करती है, और अज्ञेय ने इसे स्पष्ट करने के लिए अपनी कविता "हिरोशिमा" की चर्चा की है।**

Quick Tip to Solve: भीतरी विवशता का अर्थ लिखिए और याद कीजिए कि अज्ञेय ने कौन-सी कविता का उदाहरण दिया है।

खंड - घ (रचनात्मक लेखन) (20 marks)

रचनात्मक लेखन पर आधारित कुल 4 प्रश्न हैं | प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |

12(i). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :
(i) प्रगति पथ पर अग्रसर भारत
भारत की उपलब्धियाँअन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचानदेश की प्रगति के लिए हमारे कर्त्तव्य [6 marks]

Solution:

Step 1: अनुच्छेद लेखन का नियम अनुच्छेद एक ही विषय पर लिखा गया छोटा, क्रमबद्ध और एक धारा में बहता गद्य-खंड होता है। उसमें शीर्षक के नीचे एक ही परिच्छेद लिखा जाता है। पहला वाक्य विषय का परिचय देता है और अंतिम वाक्य निष्कर्ष या संदेश देता है। बीच में संकेत बिन्दु क्रम से आते हैं। शब्द-सीमा लगभग 120 शब्द है, यानी 110 से 130 शब्द तक चल जाते हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 6 अंक हैं। आरंभ के 1 अंक, विषयवस्तु के 4 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक निर्धारित हैं। विषयवस्तु के चार अंक तभी मिलते हैं जब तीनों संकेत बिन्दु उत्तर में आएँ और उनका विस्तार हो।

Step 3: संकेत बिन्दुओं का प्रयोग पहला बिंदु (उपलब्धियाँ): आर्थिक प्रगति, चंद्रयान, मंगल अभियान, डिजिटल भुगतान, खेल, चिकित्सा और शिक्षा का उल्लेख।
दूसरा बिंदु (अंतरराष्ट्रीय पहचान): विश्व मंचों पर भारत की सुनी जाने वाली आवाज़ और ज़िम्मेदार राष्ट्र की छवि।
तीसरा बिंदु (हमारे कर्तव्य): ईमानदारी, कानून का पालन, पर्यावरण की रक्षा और एकता।

Step 4: आदर्श उत्तर (लगभग 120 शब्द) आज भारत विकास के पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। स्वतंत्रता के समय देश गरीबी और पिछड़ेपन से जूझ रहा था, किंतु आज वह दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। विज्ञान और तकनीक में हमारी उपलब्धियाँ गर्व करने योग्य हैं। चंद्रयान की सफलता, मंगल अभियान और डिजिटल भुगतान प्रणाली इसके उदाहरण हैं। खेल, चिकित्सा और शिक्षा में भी देश ने नई ऊँचाइयाँ छुई हैं। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बात ध्यान से सुनी जाती है और उसे एक ज़िम्मेदार राष्ट्र के रूप में पहचाना जाता है। इस प्रगति को बनाए रखना हम सबका कर्तव्य है। हमें ईमानदारी से काम करना, कानूनों का पालन करना, पर्यावरण की रक्षा करना और एकता बनाए रखना चाहिए। सब मिलकर प्रयास करेंगे तो भारत शीघ्र ही विकसित राष्ट्र बनेगा।

Step 5: जाँच ऊपर के अनुच्छेद में आरंभ में विषय का परिचय है, बीच में तीनों बिन्दु क्रम से हैं और अंत में निष्कर्ष है। वाक्य छोटे हैं और वर्तनी शुद्ध है। परीक्षार्थी अपने शब्दों में अलग उदाहरण भी दे सकता है।

उत्तर: विषय 'प्रगति पथ पर अग्रसर भारत' पर ऊपर दिया गया लगभग 120 शब्दों का अनुच्छेद आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: पहले एक पंक्ति में विषय का परिचय दें। फिर तीनों संकेत बिन्दुओं को क्रम से जोड़ें और अंत में एक वाक्य का निष्कर्ष लिखें।

OR

12(ii). संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :
(ii) भारतीय रसोई में बसता है सेहत का खजाना
भारतीय रसोईघर : एक औषधालयसंतुलित एवं संपूर्ण आहारस्वादिष्ट और सेहतमंद आहार [6 marks]

Solution:

Step 1: अनुच्छेद लेखन का नियम अनुच्छेद एक ही विषय पर लिखा गया छोटा, क्रमबद्ध और एक धारा में बहता गद्य-खंड होता है। उसमें शीर्षक के नीचे एक ही परिच्छेद लिखा जाता है। पहला वाक्य विषय का परिचय देता है और अंतिम वाक्य निष्कर्ष या संदेश देता है। बीच में संकेत बिन्दु क्रम से आते हैं। शब्द-सीमा लगभग 120 शब्द है, यानी 110 से 130 शब्द तक चल जाते हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 6 अंक हैं। आरंभ के 1 अंक, विषयवस्तु के 4 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक निर्धारित हैं। विषयवस्तु के चार अंक तभी मिलते हैं जब तीनों संकेत बिन्दु उत्तर में आएँ और उनका विस्तार हो।

Step 3: संकेत बिन्दुओं का प्रयोग पहला बिंदु (रसोई एक औषधालय): हल्दी, अदरक, जीरा, अजवायन, तुलसी और घरेलू नुस्खे।
दूसरा बिंदु (संतुलित और संपूर्ण आहार): दाल, चावल, रोटी, सब्ज़ी, दही, सलाद से प्रोटीन, विटामिन, खनिज और रेशे।
तीसरा बिंदु (स्वादिष्ट और सेहतमंद): मसालों और ताज़ी सब्ज़ियों का भोजन, डिब्बाबंद खाने से परहेज़।

Step 4: आदर्श उत्तर (लगभग 120 शब्द) हमारी भारतीय रसोई केवल भोजन पकाने की जगह नहीं, बल्कि स्वास्थ्य का भंडार है। हल्दी, अदरक, जीरा, अजवायन और तुलसी जैसी चीज़ें रोज़ के खाने में मिलकर औषधि का काम करती हैं। सर्दी-खाँसी हो या पेट की गड़बड़ी, दादी-नानी के घरेलू नुस्खे रसोई से ही निकल आते हैं। हमारी थाली में दाल, चावल, रोटी, सब्ज़ी, दही और सलाद साथ होते हैं, इसलिए आहार संतुलित और संपूर्ण बनता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन, खनिज और रेशे सभी मिल जाते हैं। मसालों और ताज़ी सब्ज़ियों से बना भोजन स्वादिष्ट भी होता है और सेहतमंद भी। आज की पीढ़ी को चाहिए कि वह डिब्बाबंद और तला-भुना खाना छोड़कर अपनी इस पारंपरिक रसोई की ओर लौटे।

Step 5: जाँच ऊपर के अनुच्छेद में आरंभ में विषय का परिचय है, बीच में तीनों बिन्दु क्रम से हैं और अंत में निष्कर्ष है। वाक्य छोटे हैं और वर्तनी शुद्ध है। परीक्षार्थी अपने शब्दों में अलग उदाहरण भी दे सकता है।

उत्तर: विषय 'भारतीय रसोई में बसता है सेहत का खजाना' पर ऊपर दिया गया लगभग 120 शब्दों का अनुच्छेद आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: पहले एक पंक्ति में विषय का परिचय दें। फिर तीनों संकेत बिन्दुओं को क्रम से जोड़ें और अंत में एक वाक्य का निष्कर्ष लिखें।

OR

12(iii). संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :
(iii) पाश्चात्य सभ्यता की गिरफ्त में आती युवा पीढ़ी
पाश्चात्य संस्कृति का अर्थपाश्चात्य संस्कृति का आकर्षणमानवीय मूल्यों में बदलाव [6 marks]

Solution:

Step 1: अनुच्छेद लेखन का नियम अनुच्छेद एक ही विषय पर लिखा गया छोटा, क्रमबद्ध और एक धारा में बहता गद्य-खंड होता है। उसमें शीर्षक के नीचे एक ही परिच्छेद लिखा जाता है। पहला वाक्य विषय का परिचय देता है और अंतिम वाक्य निष्कर्ष या संदेश देता है। बीच में संकेत बिन्दु क्रम से आते हैं। शब्द-सीमा लगभग 120 शब्द है, यानी 110 से 130 शब्द तक चल जाते हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 6 अंक हैं। आरंभ के 1 अंक, विषयवस्तु के 4 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक निर्धारित हैं। विषयवस्तु के चार अंक तभी मिलते हैं जब तीनों संकेत बिन्दु उत्तर में आएँ और उनका विस्तार हो।

Step 3: संकेत बिन्दुओं का प्रयोग पहला बिंदु (अर्थ): पश्चिमी देशों की जीवन-शैली, पहनावा, खान-पान और विचार।
दूसरा बिंदु (आकर्षण): चमक-दमक, खुलापन, आधुनिकता और फ़िल्म, इंटरनेट, सोशल मीडिया का असर।
तीसरा बिंदु (मूल्यों में बदलाव): बड़ों का आदर, पारिवारिक प्रेम और सादगी में कमी; अच्छी बातें अपनाने का सुझाव।

Step 4: आदर्श उत्तर (लगभग 120 शब्द) आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता के रंग में तेज़ी से रंगती जा रही है। पाश्चात्य

संस्कृति का अर्थ है पश्चिमी देशों की जीवन-शैली, पहनावा, खान-पान और विचार। उनकी चमक-दमक, खुलापन और आधुनिकता युवाओं को बहुत लुभाती है। फ़िल्मों, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इस आकर्षण को और बढ़ा दिया है। इसका बुरा असर हमारे मानवीय मूल्यों पर दिखाई देता है। बड़ों के प्रति आदर, परिवार का प्रेम और सादगी धीरे-धीरे कम हो रहे हैं। अच्छी बातें अपनाना बुरा नहीं, पर आँख मूँदकर नकल करना ठीक नहीं। हमें अपनी संस्कृति की जड़ों से जुड़कर दूसरों की अच्छाइयाँ ही ग्रहण करनी चाहिए, तभी हमारा संतुलित विकास होगा।

Step 5: जाँच ऊपर के अनुच्छेद में आरंभ में विषय का परिचय है, बीच में तीनों बिन्दु क्रम से हैं और अंत में निष्कर्ष है। वाक्य छोटे हैं और वर्तनी शुद्ध है। परीक्षार्थी अपने शब्दों में अलग उदाहरण भी दे सकता है।

उत्तर: विषय 'पाश्चात्य सभ्यता की गिरफ्त में आती युवा पीढ़ी' पर ऊपर दिया गया लगभग 120 शब्दों का अनुच्छेद आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: पहले एक पंक्ति में विषय का परिचय दें। फिर तीनों संकेत बिन्दुओं को क्रम से जोड़ें और अंत में एक वाक्य का निष्कर्ष लिखें।

13(A). **(A) आप रेवा/रवि हैं। दैनिक समाचार-पत्रों में विज्ञापनों की भरमार को कम करने और समसामयिक विषयों पर लेखन की आवश्यकता को दर्शाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।**

[5 marks]

Solution:

Step 1: पत्र का प्रकार और प्रारूप यह औपचारिक पत्र है, क्योंकि यह संपादक को लिखा जा रहा है। इसका प्रारूप इस क्रम में होता है: ऊपर बाईं ओर प्रेषक का नाम और पता, फिर दिनांक, उसके बाद 'सेवा में' के साथ संपादक का पद और स्थान, फिर विषय। इसके बाद संबोधन 'महोदय', पत्र का मुख्य भाग और अंत में 'भवदीय' के साथ नाम आता है। प्रारूप की औपचारिकताएँ (आरंभ और अंत) 1 अंक की हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 5 अंक हैं। प्रारूप के 1 अंक, विषयवस्तु के 3 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक हैं। विषयवस्तु के तीन अंक के लिए पत्र के मुख्य भाग में तीनों बातें होनी चाहिए। शब्द-सीमा लगभग 100 शब्द है।

Step 3: मुख्य भाग के बिन्दु पहला बिंदु: पाठक होने का परिचय और विज्ञापनों की भरमार की समस्या (मुख्य समाचार खोजने में कठिनाई)।
दूसरा बिंदु: विज्ञापनों को सीमित स्थान देने का सुझाव।
तीसरा बिंदु: समसामयिक विषयों (पर्यावरण, शिक्षा, रोज़गार, विज्ञान) पर लेखों की आवश्यकता और उससे युवाओं को होने वाला लाभ।

Step 4: आदर्श उत्तर प्रेषक: रवि, 25, शांति नगर, नई दिल्ली - 110001
दिनांक: 10 मार्च, 2027

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक समाचार-पत्र,
नई दिल्ली।

विषय: समाचार-पत्र में विज्ञापनों की भरमार कम करने तथा समसामयिक विषयों पर लेखन बढ़ाने के संबंध में।

महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र का नियमित पाठक हूँ। खेद है कि आजकल इसके अधिकांश पृष्ठ विज्ञापनों से भरे रहते हैं। कई बार मुख्य समाचार खोजने में भी कठिनाई होती है। विज्ञापन आवश्यक हैं, पर उनकी भरमार से पाठक का समय और रुचि दोनों नष्ट होते हैं। मेरा सुझाव है कि विज्ञापनों को सीमित स्थान दिया जाए। साथ ही पर्यावरण, शिक्षा, रोज़गार और विज्ञान जैसे समसामयिक विषयों पर गंभीर लेख छापे जाएँ। इससे युवा वर्ग को सही जानकारी मिलेगी और उसकी सोच विकसित होगी। आशा है आप मेरे सुझाव पर ध्यान देंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
रवि

Step 5: जाँच ऊपर के पत्र में प्रारूप का क्रम सही है। मुख्य भाग लगभग 100 शब्दों का है और भाषा सरल तथा शुद्ध है। परीक्षार्थी नाम और पता अपनी सुविधा से लिख सकता है, पर अपना असली नाम और पता न लिखे।

उत्तर: ऊपर लिखा हुआ पत्र लगभग 100 शब्दों का सही प्रारूप वाला आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: औपचारिक पत्र का प्रारूप याद रखें: प्रेषक का पता, दिनांक, सेवा में, विषय, संबोधन, मुख्य भाग और अंत में भवदीय। मुख्य भाग में विज्ञापनों की समस्या और समसामयिक लेखों की आवश्यकता लिखें।

OR

13(B). (B) आप रेवा/रवि हैं। आपको माताजी के पत्र से पता चला है कि आपके छोटे भाई का स्वभाव, बोलने का तरीका दिन-प्रतिदिन उग्र होता जा रहा है। संयमित व्यवहार और मीठी वाणी का महत्व समझाते हुए उसे लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए। [5 marks]

Solution:

Step 1: पत्र का प्रकार और प्रारूप यह अनौपचारिक पत्र है, क्योंकि यह अपने छोटे भाई को लिखा जा रहा है। इसमें प्रेषक का पता और दिनांक ऊपर लिखे जाते हैं, फिर 'प्रिय अनुज' जैसा स्नेहभरा संबोधन और 'शुभाशीष' जैसा अभिवादन आता है। मुख्य भाग के बाद 'तुम्हारा शुभचिंतक भाई' या 'तुम्हारी बड़ी बहन' लिखकर नाम दिया जाता है। प्रारूप की औपचारिकताएँ (आरंभ और अंत) 1 अंक की हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 5 अंक हैं। प्रारूप के 1 अंक, विषयवस्तु के 3 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक हैं। विषयवस्तु के तीन अंक के लिए पत्र के मुख्य भाग में तीनों बातें होनी चाहिए। शब्द-सीमा लगभग 100 शब्द है।

Step 3: मुख्य भाग के बिन्दु पहला बिंदु: माताजी के पत्र से उग्र स्वभाव की जानकारी मिलने पर दुख प्रकट करना।
दूसरा बिंदु: मीठी वाणी और संयमित व्यवहार का महत्व (क्रोध से रिश्ते बिगड़ते हैं, विनम्रता से मित्र बनते हैं)।
तीसरा बिंदु: गुस्सा आने पर गहरी साँस लेने और चुप रहने जैसा व्यावहारिक सुझाव और सुधार की आशा।

Step 4: आदर्श उत्तर प्रेषक: रवि, 25, शांति नगर, नई दिल्ली - 110001
दिनांक: 10 मार्च, 2027

प्रिय अनुज,
शुभाशीष।
माताजी के पत्र से पता चला कि आजकल तुम्हारा स्वभाव गुस्सैल होता जा रहा है और तुम बड़ों से भी ऊँचे स्वर में बात करने लगे हो। यह जानकर मुझे बहुत दुख हुआ। भाई, मीठी वाणी मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है। क्रोध में कही बात रिश्ते बिगाड़ देती है, जबकि विनम्र बोली शत्रु को भी मित्र बना देती है। संयमित व्यवहार से सब तुम्हारा सम्मान करेंगे। जब भी गुस्सा आए, गहरी साँस लो और कुछ देर चुप रहो। आशा है तुम मेरी बात समझोगे और अपने स्वभाव में सुधार लाओगे।
माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई,
रवि

Step 5: जाँच ऊपर के पत्र में प्रारूप का क्रम सही है। मुख्य भाग लगभग 100 शब्दों का है और भाषा सरल तथा शुद्ध है। परीक्षार्थी नाम और पता अपनी सुविधा से लिख सकता है, पर अपना असली नाम और पता न लिखे।

उत्तर: ऊपर लिखा हुआ पत्र लगभग 100 शब्दों का सही प्रारूप वाला आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: अनौपचारिक पत्र में स्नेहभरा संबोधन रखें। माताजी के पत्र का उल्लेख करें, मीठी वाणी और संयम का महत्व समझाएँ और सुधार की आशा के साथ पत्र समाप्त करें।

14(A). (A) **आप आभा/अभय हैं। आपने हिन्दी विषय में एम.ए. किया है। अ.ब.स. समाचार पत्र में सामग्री लेखक (कंटेंट राइटर) की नौकरी का विज्ञापन जारी हुआ है। आपको उस पद के लिए आवेदन करना है। इसके लिए लगभग 80 शब्दों में अपना एक स्ववृत्त लेख तैयार कीजिए।** [5 marks]

Solution:

Step 1: स्ववृत्त का प्रारूप स्ववृत्त (बायोडाटा या रिज़्यूमे) में अपना परिचय क्रमबद्ध ढंग से दिया जाता है। इसमें सबसे ऊपर 'स्ववृत्त' शीर्षक, फिर नाम, पता, संपर्क और जन्म-तिथि आती है। उसके बाद उद्देश्य, शैक्षिक योग्यता, अनुभव या कौशल, रुचियाँ और घोषणा क्रम से लिखे जाते हैं। अंत में दिनांक और हस्ताक्षर रहते हैं। प्रारूप के 1 अंक हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 5 अंक हैं। प्रारूप के 1 अंक, विषयवस्तु के 3 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक हैं। शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है। इसलिए बातें थोड़े में, पर पूरी लिखनी होती हैं।

Step 3: लिखी जाने वाली बातें पद के अनुसार उद्देश्य: सामग्री लेखक के रूप में काम करना।
योग्यता: एम.ए. हिंदी के साथ बी.ए., बारहवीं और दसवीं का विवरण।
अनुभव और कौशल: कॉलेज पत्रिका का संपादन, शुद्ध हिंदी लेखन, टंकण, सोशल मीडिया लेखन।

Step 4: आदर्श उत्तर **स्ववृत्त**
नाम: अभय कुमार
पता: 12, गांधी नगर, नई दिल्ली - 110031
मोबाइल: 98XXXXXX01; ई-मेल: abhay.kumar@example.com
जन्म-तिथि: 5 जुलाई, 2001

उद्देश्य: सामग्री लेखक के पद पर कार्य कर अपनी लेखन-क्षमता का उपयोग करना।

शैक्षिक योग्यता: एम.ए. (हिंदी) 2024; बी.ए. (हिंदी ऑनर्स) 2022; बारहवीं 2019 (82%); दसवीं 2017 (88%)।

अनुभव एवं कौशल: कॉलेज पत्रिका के संपादन का अनुभव; शुद्ध हिंदी लेखन; कंप्यूटर पर हिंदी टंकण; सोशल मीडिया लेखन।

रुचियाँ: पुस्तकें पढ़ना, कविता और ब्लॉग लिखना।

घोषणा: मैं घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।

दिनांक: 10 मार्च, 2027; हस्ताक्षर: अभय कुमार

Step 5: जाँच ऊपर के उत्तर में प्रारूप ठीक है। विषयवस्तु के सभी बिन्दु आए हैं और लंबाई लगभग 80 शब्द है। नाम, पता और ई-मेल काल्पनिक हैं, परीक्षार्थी अपना असली विवरण न लिखे।

उत्तर: ऊपर दिया गया स्ववृत्त प्रारूप और विषयवस्तु के अनुसार आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: स्ववृत्त में नाम, पता, संपर्क, उद्देश्य, शैक्षिक योग्यता, अनुभव और कौशल, रुचियाँ, घोषणा, दिनांक और हस्ताक्षर क्रम से लिखें। सब कुछ पद के अनुसार रखें।

OR

14(B). (B) **आप आभा/अभय हैं। आपकी कॉलोनी की सड़कें नगर-पालिका द्वारा नई बनवा दी गई हैं। नगर-पालिका के अध्यक्ष को नई सड़कें बनवाने के लिए धन्यवाद ज्ञापन करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए।** [5 marks]

Solution:

Step 1: ई-मेल का प्रारूप ई-मेल में सबसे ऊपर प्रेषक और प्रेषिती (To) का ई-मेल पता और विषय (Subject) लिखा जाता है। उसके बाद संबोधन, संक्षिप्त मुख्य भाग और अंत में अभिवादन के साथ अपना नाम लिखा जाता है। भाषा औपचारिक और छोटी रखी जाती है। प्रारूप के 1 अंक हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 5 अंक हैं। प्रारूप के 1 अंक, विषयवस्तु के 3 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक हैं। शब्द-सीमा लगभग 80 शब्द है। इसलिए बातें थोड़े में, पर पूरी लिखनी होती हैं।

Step 3: लिखी जाने वाली बातें पहला बिंदु: अपना परिचय और पहले सड़कों की खराब हालत से हुई परेशानी।
दूसरा बिंदु: नई सड़कें बनने से बच्चों, बुज़ुर्गों और वाहन चालकों को राहत और पानी भरने की समस्या का हल।
तीसरा बिंदु: अध्यक्ष और कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद तथा आगे भी सहयोग की आशा।

Step 4: आदर्श उत्तर **प्रेषक:** abhay.kumar@example.com
प्रेषिती: adhyaksh@nagarpalika.example
विषय: नई सड़कें बनवाने के लिए धन्यवाद

आदरणीय अध्यक्ष महोदय,
सादर नमस्कार।
मैं सुंदर कॉलोनी का निवासी अभय हूँ। हमारी कॉलोनी की सड़कें बहुत समय से टूटी हुई थीं, जिससे आने-जाने में बड़ी परेशानी होती थी। आपके सहयोग से नगर-पालिका ने अब नई सड़कें बनवा दी हैं। इससे बच्चों, बुज़ुर्गों और वाहन चलाने वालों को बहुत राहत मिली है। बरसात में पानी भरने की समस्या भी दूर हो गई है। इस जन-हितकारी काम के लिए हम सभी निवासी आपके और नगर-पालिका के कर्मचारियों के हृदय से आभारी हैं। आशा है भविष्य में भी आप इसी तरह हमारी समस्याएँ सुलझाते रहेंगे।

धन्यवाद सहित,
अभय
सुंदर कॉलोनी

Step 5: जाँच ऊपर के उत्तर में प्रारूप ठीक है। विषयवस्तु के सभी बिन्दु आए हैं और लंबाई लगभग 80 शब्द है। नाम, पता और ई-मेल काल्पनिक हैं, परीक्षार्थी अपना असली विवरण न लिखे।

उत्तर: ऊपर दिया गया ई-मेल प्रारूप और विषयवस्तु के अनुसार आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: ई-मेल में प्रेषक, प्रेषिती, विषय, संबोधन, छोटा मुख्य भाग और समापन लिखें। मुख्य भाग में सड़कों से पहले की परेशानी, अब की राहत और धन्यवाद लिखें।

15(A). (A) **इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ ही ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर क्राइम में भी बहुत वृद्धि हुई है। इस ओर आम नागरिक को सतर्क और जागरूक करने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में पुलिस विभाग की ओर से तैयार कीजिए।** [4 marks]

Solution:

Step 1: विज्ञापन का प्रारूप विज्ञापन छोटा, आकर्षक और असरदार होना चाहिए। उसमें सबसे ऊपर ध्यान खींचने वाला शीर्षक या नारा, बीच में ज़रूरी बातें, अंत में संपर्क की जानकारी और जारी करने वाले का नाम रहता है। वाक्य छोटे और सीधे होते हैं। रचनात्मक प्रस्तुति के 1 अंक हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 4 अंक हैं: रचनात्मक प्रस्तुति के 1 अंक, विषयवस्तु के 2 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक। शब्द-सीमा लगभग 40 शब्द है, इसलिए हर वाक्य काम का होना चाहिए।

Step 3: लिखी जाने वाली बातें शीर्षक या नारा: 'साइबर ठगी से सावधान!'
ज़रूरी बातें: ओटीपी और पासवर्ड न बताना, अनजान लिंक पर क्लिक न करना, लालच भरे संदेशों से बचना।
अंत में: हेल्पलाइन 1930 और पुलिस विभाग का नाम।

Step 4: आदर्श उत्तर **साइबर ठगी से सावधान!**
ओटीपी, पासवर्ड या कार्ड की जानकारी किसी को न बताएँ। अनजान लिंक पर क्लिक न करें। लालच भरे संदेशों पर भरोसा न करें। ठगी होने पर तुरंत साइबर हेल्पलाइन 1930 पर संपर्क करें।
जागरूक बनें, सुरक्षित रहें!
जनहित में जारी: पुलिस विभाग

Step 5: जाँच ऊपर के उत्तर में प्रारूप का ध्यान रखा गया है। मुख्य भाग लगभग 40 शब्दों का है, भाषा सरल है और वर्तनी शुद्ध है। परीक्षार्थी अपनी कल्पना से दूसरे नारे और बातें भी लिख सकता है।

उत्तर: ऊपर लिखा गया विज्ञापन लगभग 40 शब्दों का सही आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: विज्ञापन में ध्यान खींचने वाला नारा लिखें। फिर साइबर ठगी से बचने की दो-तीन सलाह दें और अंत में हेल्पलाइन तथा पुलिस विभाग का नाम रखें।

OR

15(B). **(B) अपने विद्यालय के प्राचार्य / प्राचार्या की ओर से आगामी बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित होने वाले सभी परीक्षार्थियों के लिए शुभकामना-संदेश लगभग 40 शब्दों में लिखिए।** [4 marks]

Solution:

Step 1: संदेश का प्रारूप संदेश-लेखन में सबसे ऊपर 'संदेश' शब्द और दिनांक लिखा जाता है, फिर संबोधन, उसके बाद संक्षिप्त संदेश और अंत में संदेश भेजने वाले का नाम और पद लिखा जाता है। भाषा सरल और भावपूर्ण रखी जाती है। प्रारूप के 1 अंक हैं।

Step 2: अंक-योजना समझें इस प्रश्न के 4 अंक हैं: प्रारूप के 1 अंक, विषयवस्तु के 2 अंक और भाषा-शुद्धता के 1 अंक। शब्द-सीमा लगभग 40 शब्द है, इसलिए हर वाक्य काम का होना चाहिए।

Step 3: लिखी जाने वाली बातें शीर्षक, दिनांक और संबोधन: 'प्रिय परीक्षार्थियो'।
संदेश: मेहनत की सराहना, शांत मन से परीक्षा देना, समय और स्वास्थ्य का ध्यान, सफलता की कामना।
अंत में: प्राचार्य का पद और विद्यालय।

Step 4: आदर्श उत्तर **शुभकामना-संदेश**
दिनांक: 5 फ़रवरी, 2027
प्रिय परीक्षार्थियो,
बोर्ड परीक्षा के लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएँ। आपने पूरे वर्ष मन लगाकर परिश्रम किया है। अब शांत मन और पूरे आत्मविश्वास से परीक्षा दें। समय का सही उपयोग करें और स्वस्थ रहें। सफलता अवश्य आपके कदम चूमेगी।
प्राचार्य, ... विद्यालय

Step 5: जाँच ऊपर के उत्तर में प्रारूप का ध्यान रखा गया है। मुख्य भाग लगभग 40 शब्दों का है, भाषा सरल है और वर्तनी शुद्ध है। परीक्षार्थी अपनी कल्पना से दूसरे नारे और बातें भी लिख सकता है।

उत्तर: ऊपर लिखा गया संदेश लगभग 40 शब्दों का सही आदर्श उत्तर है।

Quick Tip to Solve: संदेश में दिनांक और संबोधन लिखें। फिर मेहनत की सराहना, आत्मविश्वास से परीक्षा देने की सलाह और सफलता की कामना करें। अंत में प्राचार्य का पद लिखें।